

केंद्रीय विश्वविद्यालय का 8वाँ दीक्षांत समारोह धूमधाम से संपन्न



धर्मशाला। केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला का आठवाँ दीक्षांत समारोह राजकीय कालेज के सभागार में भव्य रूप से आयोजित किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं को उपाधियाँ प्रदान की गईं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश) के कुलपति एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार पाठक उपस्थित रहे। दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुए शुरू हुए दीक्षांत समारोह की शुरुआत में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने पारंपरिक हिमाचली टोपी, अंगवस्त्र और चंबा थाल भेंट कर सभी अतिथियों का स्वागत किया। वहीं कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा की अगुवाई में दीक्षांत समारोह का आगाज़ किया गया।

इस समारोह में वर्ष 2020 में उत्तीर्ण यूजी, पीजी और पीजी डिप्लोमा के कुल 206 तथा 2021 में उत्तीर्ण यूजी और पीजी के 256 छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की गईं।

इस मौके पर अपने संबोधन में कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में देश का अग्रणी संस्थान रहा है। "अगर हमें ए + ग्रेड प्राप्त हुआ है, तो उसका श्रेय राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समर्पणपूर्वक लागू करने के प्रयासों को जाता है।" उन्होंने शिक्षा की भूमिका को मानवता की दृष्टि से समझाते हुए कहा कि हमारा प्रयास बेस्ट

माइंड्स तैयार करना है जो आत्मनिर्भर और एकात्म



मानवतावाद से प्रेरित हों। कुलपति ने कहा कि भारतीय

ज्ञान परंपरा की ओर अब पूरा विश्व देख रहा है, और हमने इसे अपने पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास किया है। उन्होंने बताया कि डोगरी भाषा को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय को 50 पाठ्यपुस्तकें तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है, जो भविष्य में देशभर में पढ़ाई जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि विदेशी शिक्षा मॉडल को अपनाने से हमारी जड़ों से दूरी बनती है। समग्र शिक्षा की ओर लौटना और मातृभाषा में शिक्षा देना हमारी शक्ति है। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) 2025 द्वारा जारी नवीनतम रैंकिंग में विश्वविद्यालय को देश के सभी सरकारी विश्वविद्यालयों में आठवां स्थान प्राप्त हुआ है, वहीं यह हिमाचल प्रदेश का सर्वोच्च रैंक प्राप्त करने वाला विश्वविद्यालय बन गया है। उन्होंने कहा कि 49वें स्थान से 8वें स्थान पर पहुंचना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। वहीं समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. विनय कुमार पाठक ने शिक्षा और दीक्षा के बीच अंतर को रेखांकित करते हुए कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान देती है, जबकि दीक्षा जीवन जीने की कला सिखाती है। उन्होंने कहा कि आज के तकनीकी युग में एआई जैसे उभरते विषयों को विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने एक प्रेरणादायक श्लोक के माध्यम से निरंतर कर्म करने का संदेश दिया: "चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वदुम् दुम्बरम् सूर्यस्य पश्य स्वेमनम्। यो न तन्द्रयते चरन् चरैवेति चरैवेति॥" अर्थात - "चलते रहो, चलते रहो यही सफलता का मूल मंत्र है।"

समारोह में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद्मश्री आचार्य डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी, कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. सच्चिदानंद जोशी, विशेष अतिथि के रूप में प्रो. सुशील मिश्र (कुलपति, पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय जालंधर), प्रो. दिनेश अग्रवाल (कुलपति, विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय गुरुग्राम) और प्रो. राज नेहरू (पूर्व कुलपति एवं विशेष कार्य अधिकारी, हरियाणा) उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने अपने संबोधन में डिग्री हासिल करने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी और उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

समारोह में सभी विभागों के अधिष्ठाता, शिक्षकगण एवं छात्रगण मौजूद रहे।

केंद्रीय विवि के 8वें दीक्षांत समारोह में कुल 462 छात्रों ने डिग्री के लिए पंजीकरण कराया है, जिसमें 2020 में पास आउट यूजी, पीजी और पीजी डिप्लोमा के कुल 206 छात्र शामिल हैं। वहीं 2021 में पास आउट यूजी और पीजी के कुल 256 छात्रों ने डिग्री के लिए पंजीकरण कराया है।

संदेश

विश्वविद्यालय का न्यूज़ लेटर "धौलाधार संदेश" विश्वविद्यालय की तमाम गतिविधियों का एक संकलन है, जो निरंतर कालानुक्रमिक क्रम में विश्वविद्यालय से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं को सर्वसुलभ बनाने का कार्य करता है। इसके लिए मैं पूरी संपादकीय टीम की सराहना करता हूँ। यह बड़े हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय परिवार के अथक प्रयासों से हमारा विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय ने अपना आठवाँ दीक्षांत समारोह सफलतापूर्वक संपन्न किया, जिसमें यूजी, पीजी और पीजी डिप्लोमा के विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। इस अवसर पर छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उत्तर प्रदेश) के कुलपति एवं भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष प्रो. विनय कुमार पाठक ने दीक्षांत भाषण दिया। साथ ही प्रो. सच्चिदानंद जोशी, सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. (डॉ.) हरमोहिंदर सिंह बेदी ने अध्यक्षता की भूमिका निभाई। इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) 2025 द्वारा जारी नवीनतम रैंकिंग में जहाँ एक ओर हमारे विश्वविद्यालय को देश में आठवाँ स्थान प्राप्त हुआ है, वहीं दूसरी ओर यह विश्वविद्यालय संपूर्ण रैंकिंग में स्थान प्राप्त करने वाला हिमाचल प्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है। उपलब्धियों की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय ने एम.ए. इतिहास, एम.ए. राजनीतिक विज्ञान, एम.ए. अर्थशास्त्र, एम.बी.ए. और एम.सी.ए. विषयों के ऑनलाइन कार्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। यह कार्य नैक ए+ (एन ए ए सी ए+) ग्रेड प्राप्त होने के उपरांत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा ग्रेडेड स्वायत्तता मिलने के बाद संभव हो पाया है। विश्वविद्यालय ने अपना सामाजिक दायित्व निभाते हुए हाल ही में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध में शहीद हुए सूबेदार मेजर पवन कुमार के पिता, सेवानिवृत्त सैनिक श्री गजर सिंह, और शहीद की पत्नी सुश्री अनामिका को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर न केवल सम्मानित किया, बल्कि शहीद पवन कुमार के पुत्र के लिए विश्वविद्यालय में निशुल्क शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान भी किया। विश्वविद्यालय में पहली बार ऐसा हुआ है कि सभी मुख्य शैक्षणिक अधिकारी कुलसचिव, वित्ताधिकारी, पुस्तकालयाध्यक्ष और परीक्षा नियंत्रक — पूर्णकालिक रूप से नियुक्त हैं, जोकि सुदृढ़ शासन और बेहतर निर्णय-प्रक्रिया की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पठन-पाठन के अतिरिक्त विश्वविद्यालय लगातार खेल प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कौशल विकास कार्यक्रमों, अकादमिक सम्मेलनों आदि के आयोजन में भी सक्रिय है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। मैं न्यूज़ लेटर "धौलाधार संदेश" के नियमित प्रकाशन के लिए पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ।

प्रो. सत प्रकाश बंसल
कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला



डिजिटल प्रति के लिए
यहाँ स्कैन करें

आईआईआरएफ रैंकिंग 2025 में सीयू ने आठवां स्थान किया हासिल

देश के सरकारी विश्वविद्यालयों में शीर्ष 10 स्थानों में मिली उपलब्धि विश्वविद्यालय शिक्षण-शिक्षण संसाधन, पेडागॉजी में रहा प्रथम स्थान पर शोध के क्षेत्र में मिली बेहतरीन सफलता, दूसरे स्थान पर किया कब्जा

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) 2025 द्वारा जारी नवीनतम रैंकिंग में विश्वविद्यालय को देश के सभी सरकारी विश्वविद्यालयों में आठवां स्थान प्राप्त हुआ है, वहीं यह हिमाचल प्रदेश का सर्वोच्च रैंक प्राप्त करने वाला विश्वविद्यालय बन गया है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय की अकादमिक गुणवत्ता, अनुसंधान उत्कृष्टता, उद्योग से जुड़ाव और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। वर्ष 2009 में स्थापित यह विश्वविद्यालय सीमित संसाधनों और अस्थायी परिसरों में कार्य करते हुए भी लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस वर्ष की आईआईआरएफ रैंकिंग में देशभर के 2500 से अधिक उच्च शिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें सीयूएचपी ने कुल 1000 में से 985.21 अंक प्राप्त किए। यह रैंकिंग शिक्षा, अनुसंधान, उद्योग सहभागिता, प्लेसमेंट, अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण, और सामाजिक प्रभाव जैसे सात मानकों पर आधारित थी।

विशेष रूप से, विश्वविद्यालय को शिक्षण-शिक्षण संसाधन और पेडागॉजी में प्रथम स्थान (220.5 अंक) तथा अनुसंधान क्षेत्र में दूसरा स्थान (199.9 अंक) प्राप्त हुआ है। यह रैंकिंग शोध प्रकाशनों की संख्या, एच-इंडेक्स (63), और पीएचडी उपाधियों की संख्या के आधार पर तय की गई। साथ ही, विश्वविद्यालय को प्लेसमेंट प्रदर्शन और छात्र सहायता में देशभर में पांचवां स्थान प्राप्त हुआ है।

इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, शोधार्थियों, छात्रों और प्रशासनिक कर्मियों को बधाई दी। उन्होंने कहा, "यह रैंकिंग हमारे संकल्प, परिश्रम और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हिमाचल की पर्वतीय धरती पर स्थापित



यह विश्वविद्यालय अब वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार है। हमारा लक्ष्य उच्च शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और समावेशी बनाना है।" यह उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एन ए ए सी) से ए प्लस ग्रेड प्राप्त है तथा विश्वविद्यालय अनुदान

आयोग (यूजीसी) द्वारा ग्रेडेड स्वायत्तता दी गई है। सीयूएचपी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन के लिए उत्तर क्षेत्रीय नोडल केंद्र भी नामित किया गया है। विश्वविद्यालय ने अपने पाठ्यक्रमों को नीति के अनुरूप पुनर्गठित किया है, जिसमें बहु-विषयक, कौशल-आधारित, अनुसंधान-उन्मुख एवं मूल्य-आधारित शिक्षा का समावेश है।

आज विश्वविद्यालय के पास 2000 से अधिक शोध प्रकाशन, 35000 से अधिक उद्धरण, और पर्यावरण रसायन एवं न्यूक्लियर फिजिक्स जैसे क्षेत्रों में विश्व स्तर पर शीर्ष 3% में स्थान है। विश्वविद्यालय को 100 करोड़ से अधिक के शोध परियोजनाएं, कई पेटेंट, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समझौते, और विश्वस्तरीय डिजिटल पुस्तकालय जैसी उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। इसके अलावा, विश्वविद्यालय के छात्र ₹4.68 लाख प्रति वर्ष के औसत पैकेज पर प्रतिष्ठित कंपनियों में नियुक्त हुए हैं तथा ₹60,000 प्रति माह तक की इंटरशिप राशि प्राप्त कर रहे हैं। यह रैंकिंग हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की उन नीतियों और प्रयासों की पुष्टि करती है जो इसे उच्च गुणवत्ता, नवाचार, और सामाजिक जिम्मेदारी के क्षेत्र में अग्रणी बना रही हैं। निकट भविष्य में विश्वविद्यालय बुनियादी ढांचे के विस्तार, उद्योग साझेदारियों और वैश्विक पहचान की दिशा में और अधिक तेज़ी से आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर कुलपति के साथ कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार सहित अन्य संकाय सदस्य मौजूद रहे।

साहित्य- संस्कृति में अनुकूलन के महत्वपूर्ण आयामों पर चर्चा केंद्रीय विवि में 26वें तीन दिवसीय मेलो अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ वीसी प्रो. सत प्रकाश बंसल ने किया शुभारंभ, देश-विदेश के प्रतिभागी शामिल



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि “अनुकूलन एक मौलिक मानवीय क्रिया है, जो हमें अतीत को वर्तमान में पुनः व्याख्यायित करने और भविष्य के लिए अपनी कहानियों को जीवित रखने में मदद करती है। डिजिटल युग में कहानियाँ विधाओं और भौगोलिक सीमाओं को पार कर यात्रा करती हैं और हमें मौलिकता, सृजनात्मकता और सांस्कृतिक अर्थ पर पुनर्विचार करने की चुनौती देती हैं।” वे शुक्रवार को धर्मशाला कालेज के सभागार में मेलो के 26वें तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ करने के बाद संबोधित करते हुए बोल रहे थे। अपने संबोधन में उन्होंने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया और मेलों के प्रयासों की सराहना की। प्रो. बंसल ने विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य “नेति नेति चरैवति चरैवति” को नवोन्मेष और बौद्धिक सक्रियता का प्रतीक बताया। मेलो की अध्यक्ष प्रो. मञ्जु जैडका समारोह में उपस्थित रहीं। सम्मेलन संयोजक सदस्य प्रो. रोशन लाल शर्मा ने कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. नरेंद्र सांख्यान और अतिथियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर मेलो की उपाध्यक्ष प्रो. देबरती बंद्योपाध्याय और कई विद्वतजन वहां मौजूद रहे। शैक्षणिक सत्रों की शुरुआत बीज वक्तव्य से हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रो. तेज एन. धर (सीनियर प्रोफेसर, शूलिनी विश्वविद्यालय, सोलन) ने की। मुख्य वक्तव्य प्रो. इफ़्फ़त मक़बूल (अंग्रेज़ी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय) ने दिया। जिन्होंने साहित्य और संस्कृति में अनुकूलन के महत्वपूर्ण आयामों पर विचार प्रस्तुत

किए। प्रो. रोशन लाल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित आमंत्रित व्याख्यान में श्री सुमन्त सरकार (डायरेक्टर एवं मेंटर, थिएटर एवं फिल्म; डायरेक्टर, द मिस्टिक माइंड्स, धर्मशाला) ने “द आर्ट ऑफ़ विज़ुअल अडैप्टेशन: फ़ॉर्म पेज टू स्टेज एंड स्क्रीन” विषय पर व्याख्यान दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. कृष्णन उन्नी की अध्यक्षता में आईएसएम व्याख्यान आयोजित हुआ, जिसमें प्रो. हरीश त्रिवेदी (पूर्व प्रोफेसर, अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। वे तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद अध्ययन के प्रमुख विद्वान हैं।



आईज़ैक सिक्वेरा मेमोरियल अवॉर्ड (आईएसएम) - स्व. प्रोफेसर आईज़ैक सिक्वेरा की याद में मेलों हर साल सबसे अच्छा शोध-पत्र प्रस्तुत करने वाले युवा शोधार्थी को यह अवॉर्ड देता है। विजेता को प्रमाणपत्र और ₹5,000 नकद पुरस्कार मिलेगा। यह अवॉर्ड केवल भारतीय नागरिकों और मेलों के सदस्यों के लिए है। प्रतिभागी की उम्र सम्मेलन के समय 40 वर्ष से कम होनी चाहिए। सारांश और पूरा शोध-पत्र निर्धारित समय सीमा में और सही प्रारूप में जमा करना होता है। जिसमें साझा (जॉइंट)

शोध-पत्र स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

(मेलो की शुरुआत 1997 में हुई थी - मेलों (द सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ़ द मल्टी-एथनिक लिटरेचर्स ऑफ़ द वर्ल्ड) की स्थापना वर्ष 1997 में मेलस-इंडिया के रूप में हुई थी। यह एक प्रमुख शैक्षणिक संगठन है।

इसके सदस्य कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्वान और आलोचक हैं, जो विशेष रूप से विश्व साहित्य और सीमाओं से परे साहित्यिक संबंधों में रुचि रखते हैं।

संगठन हर वर्ष एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करता है। यह संगठन शैक्षणिक मानदंडों को बनाए रखने, नवोदित विद्वानों को प्रोत्साहन देने और वरिष्ठ व युवा विद्वानों के बीच विचार-विमर्श का मंच उपलब्ध कराने के लिए कार्यरत है।

मेलो की शोधपत्रिका मेजओ लगभग एक दशक से प्रिंट रूप में उपलब्ध है।

विरासत और सहयोग का उत्सव: सम्मेलन के संयोजक प्रो. रोशन लाल शर्मा के अनुसार इससे पहले हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय साल 2018 में 17वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर चुका है। जिसमें 200 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया जिनमें 130 शोधपत्र प्रस्तुतकर्ता शामिल थे। यह 26वां मेलो अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 21 सितम्बर 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेष सत्र, शोधपत्र प्रस्तुतियाँ और सांस्कृतिक चर्चाएँ होंगी, जो अनुकूलन अध्ययन पर वैश्विक विमर्श को और समृद्ध करेगी।



मेरा भारत महान

लहराए तिरंगा शान से, ये दिन है अभिमान का,
बलिदानों से सींचा गया, ये फूल है बलिदान का।

गूंजे वंदे मातरम, हर दिल में ये गाथा हो,
देशभक्ति की ज्योति जले, हर मन में ये बात हो।

मिट्टी की खुशबू कहे, वीरों का हम कर्ज चुकाएँ,
भारत माँ के लाल बनें, अब आगे हम बढ़ जाएँ।

स्वतंत्रता का पर्व यही, एकता की पहचान है,
जन-जन के हृदय में बसा, मेरा भारत महान है।

राहुल ठाकुर
एमजेएमसी द्वितीय वर्ष

भारत माता के जयकारों से गूंज उठा देहरा बाजार

“हर घर तिरंगा” अभियान के तहत विद्यार्थियों ने
निकाली यात्रा सीयू के कुलसचिव
प्रो. नरेंद्र सांख्यान ने किया संबोधित



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सप्त सिंधु परिसर देहरा में भारत सरकार के “हर घर तिरंगा” अभियान के अंतर्गत तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा के दौरान पूरा देहरा बाजार भारत माता के जयकारों से गूंज उठा। इस तिरंगा यात्रा में सप्त सिंधु परिसर, देहरा एक और दो के सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और शिक्षकेतर कर्मचारियों ने काफी संख्या में भाग लिया।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सप्त सिंधु परिसर देहरा में भारत सरकार के हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के निर्देशानुसार तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से प्राप्त निर्देशों के अनुसार हर घर तिरंगा कार्यक्रम का आयोजन केंद्रीय विश्वविद्यालय में 2 अगस्त से लेकर 15 अगस्त तक किया जाना निश्चित हुआ है। इस दौरान कई प्रकार के देशभक्ति के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे तथा विश्वविद्यालय के विद्यार्थी तथा संकाय सदस्य गाँव-गाँव में जाकर तिरंगे के महत्व को समझाएँगे तथा हर घर में तिरंगा फहराने के लिए जागरूक करेंगे। इस यात्रा के दौरान पूरा देहरा बाजार भारत माता के जयकारे तथा देशभक्ति के गीतों से गूंज उठा। सप्त सिंधु परिसर देहरा के निदेशक प्रो. संजीत सिंह ने बताया कि तिरंगा यात्रा सप्त सिंधु परिसर देहरा एक से देहरा बाजार तक निकाली गई तथा सप्त सिंधु परिसर देहरा दो से भी तिरंगा यात्रा देहरा बाजार तक लाई गई तथा दोनों परिसरों के तिरंगा यात्रा में शामिल सभी सदस्यों को हनुमान चौक में इकट्ठा किया गया। यात्रा के हनुमान चौक में पहुँचने पर इस यात्रा में केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. नरेंद्र कुमार सांख्यान ने भी यात्रा में भाग लिया तथा वहाँ उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित भी किया। प्रो. सांख्यान ने अपने संबोधन में तिरंगे के महत्व पर प्रकाश डाला तथा बताया कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के नागरिकों की आशाएं और आकांक्षाएं दर्शाता है। यह हमारे राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक है। उन्होंने वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों से आह्वान किया कि आप सभी आने वाले पंद्रह अगस्त को अपने घर पर तिरंगा जरूर फहराएँ। सप्त सिंधु परिसर देहरा के निदेशक प्रो. संजीत सिंह ने भी यात्रा में उपस्थित सभी सदस्यों को संबोधित किया तथा यात्रा उपस्थित होने के लिए सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस उपलक्ष्य पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के सप्त सिंधु परिसर, देहरा एक और दो के सभी विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य तथा गैर संकाय सदस्य मौजूद रहे।

अभियान युवाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को कर रहा और सशक्त- प्रो. बंसल

सीयू में “हर घर तिरंगा” अभियान के तहत निकाली तिरंगा यात्रा



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने भारत सरकार के निर्देशानुसार “हर घर तिरंगा” अभियान के अंतर्गत एक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया। यह यात्रा देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करने और राष्ट्रीय ध्वज के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से निकाली गई। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह 11 बजे विश्वविद्यालय परिसर से हुआ। शिक्षक गण, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों और काफी संख्या में विद्यार्थियों ने इसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। यात्रा के दौरान प्रतिभागियों ने इस दौरान 79वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 79 मीटर और 30 मीटर अलग से तिरंगा इस यात्रा में लेकर देशभक्ति के नारों के साथ पूरे मार्ग में स्वतंत्रता, एकता और भाईचारे का संदेश फैलाया। तिरंगा यात्रा विश्वविद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर शहीद स्मारक तक पहुंची। पूरे मार्ग में नागरिकों ने भी यात्रा का स्वागत किया और तिरंगा लहराकर इसमें अपनी भागीदारी दर्ज कराई। वहीं केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे विद्यार्थी केवल कक्षा तक

सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज में जागरूकता फैलाने के लिए सक्रिय हैं। वे घर-घर जाकर तिरंगे के महत्व के बारे में लोगों को समझा रहे हैं। इस वर्ष हम गर्व के साथ अपना 79वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं, और इस अवसर पर विश्वविद्यालय ने भव्य तिरंगा आयोजन किया है।

यह अभियान युवाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को और सशक्त करेगा।

“हर घर तिरंगा” अभियान का उद्देश्य नागरिकों में राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान, देशभक्ति और एकता की भावना को मजबूत करना है। केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने इस अभियान के तहत न केवल तिरंगा यात्रा निकाली, बल्कि आने वाले दिनों में जागरूकता कार्यक्रम, प्रदर्शनी और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करने की घोषणा की है। इसमें अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं, 50 से अधिक शिक्षकों और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी ने इसे “यादगार और प्रेरणादायक अनुभव” बताया।

सीयू में स्वतंत्रता दिवस पर शहीद सूबेदार मेजर पवन की शहादत को किया याद, परिजन सम्मानित



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में 79वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने धौलाधार परिसर-एक में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इस मौके पर तीनों परिसरों देहरा, धर्मशाला और शाहपुर से विश्वविद्यालय परिवार मौजूद रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस मौके पर विशेष अतिथि के रूप में शाहपुर निवासी शहीद सूबेदार मेजर पवन कुमार के परिजन पिता सेवानिवृत्त सैनिक गरज सिंह और शहीद की पुत्री अनामिका मौजूद रही। कार्यक्रम में शहीद की शहादत को नमन करते हुए परिजनों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर शहीद के पिता सेवानिवृत्त सैनिक गरज सिंह ने पुत्र की शहादत पर गर्व जताते हुए विश्वविद्यालय परिवार का इस सम्मान देने पर आभार जताया। उन्होंने कहा कि सेना में शहादत बहुत मायने रखती है। उन्हें इस बात का गर्व है कि उनका बेटा इस देश के काम आया। इसके बाद कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने विश्वविद्यालय परिवार को 79वें

स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए कहा कि यह दिन आत्ममंथन का दिन होता है। 15 अगस्त मूलतः यह दिन हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को श्रद्धांजलि है। एकता, विकास और समृद्धि से भरे भविष्य के प्रति हमें अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करना होगा। हम कल के भविष्य के वादे को अपनाते हुए, अपने अतीत का सम्मान करते हुए इसऐतिहासिक अवसर को मनाने में शामिल हों। आज का दिन वास्तव में हम सब के लिए आत्मनिरीक्षण का दिन है कि हम एक बार यह सोचें, यह देखें कि जिस धरा पर हमने जन्म लिया, जिस धरा ने हमें सब कुछ दिया, जिस देश में हमने जन्म लिया, जिस देश ने हमें सब कुछ दिया, बदले में हमने क्या दिया? आज का दिन प्रेरणा लेने का दिन है, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन बलिदान किया, इस देश के लिए ऐसे अनगिनत नाम हैं, आज का दिन है उनको याद करने का। इस मौके पर एमए हिंदी की छात्रा वैशाली विष्ट ने कविता और उदय विष्ट ने बांसुरी की धुन पेश कर खूब तालियां बटोरीं।

शहीद पवन कुमार की पुत्री अनामिका को मुफ्त शिक्षा मुहैया करवाएगा सीयू

केंद्रीय विवि की अकादमिक काउंसिल की बैठक में मिली मंजूरी 10 क्रेडिट का स्किल कोर्स करने पर मिलेगी यूजी-पीजी की डिग्री

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय शहीद सूबेदार मेजर शहीद पवन कुमार की पुत्री अनामिका को पोस्ट ग्रेजुएशन तक मुफ्त शिक्षा मुहैया करवाएगा। अनामिका अपनी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकती हैं। अनामिका मूलतः शाहपुर की रहने वाली हैं। हाल ही में केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 15 अगस्त को हुए कार्यक्रम में उन्हें उनके दादा जी के साथ सम्मानित किया गया है। इस संबंध में सोमवार को धौलाधार परिसर एक के सेमिनार हाल में हुई



अकादमिक काउंसिल की बैठक में इस फैसले की सराहना करते हुए इस फैसले को मंजूरी दी गयी है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल की अध्यक्षता में हुई बैठक के दौरान कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। इस मौके पर सदस्य सचिव के तौर पर कुलसचिव प्रो. नरेंद्र कुमार सांख्यान ने

भाग लिया। बैठक में अकादमिक काउंसिल के सभी सदस्य मौजूद रहे। वहीं भारत सरकार और यूजीसी ने पूरे भारत में पांच केंद्रीय विश्वविद्यालयों को मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर (एमएमटीटीसी) दिए हैं इसमें केंद्रीय विश्वविद्यालय भी एक है। अकादमिक काउंसिल ने कुलपति के प्रयासों की भूरि-भूरि

सराहना की है और इसे जल्द से जल्द शुरू करने के लिए कहा है। इसमें संकाय सदस्यों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। वहीं इस मौके पर कई समझौता ज्ञापनों को भी मंजूरी प्रदान की गई है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय में हाल ही में स्थापित दूरवर्ती एवं

ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन) सेंटर के शुभारंभ पर अकादमिक काउंसिल ने कुलपति को बधाई दी। काउंसिल के अनुसार बहुत कम समय में विश्वविद्यालय ने इस फैसले को अंजाम तक पहुंचाया है। भारतीय ज्ञान परंपरा के तहत पुस्तकों के हिंदी

में अनुवाद की प्रक्रिया को पर्यटन विभाग ने अंजाम दे दिया है। विभाग ने 50 पुस्तकों का अनुवाद कर दिया है। काउंसिल ने इस प्रयास की सराहना की है और जल्द से जल्द अन्य विभागों से इस संबंध में कदम उठाने की बात कही है। वहीं बैठक में इस फैसले को भी मुहर लगाई

गई जिसमें यूजी-पीजी करने वाले विद्यार्थी को डिग्री प्राप्त करने के लिए छात्रों को 10 क्रेडिट का स्किल पाठ्यक्रम अनिवार्य रूप से करना होगा। इसके लिए एक बास्केट तैयार की गई है। जिसमें विद्यार्थी अपनी पसंद के कोर्स चुन पाएंगे। यह फैसला इसी सत्र से लागू हो रहा है।

मीडिया छात्रों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम



केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के पत्रकारिता एवं न्यू मीडिया विभाग द्वारा मीडिया छात्रों के लिए एक विशेष कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ज़ी नेटवर्क के प्रसिद्ध एंकर श्री मनोज श्रीवास्तव को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री श्रीवास्तव ने छात्रों को पत्रकारिता के व्यावहारिक प्रशिक्षण (प्राैक्टिकल ट्रेनिंग) के महत्व के बारे में बताया और पूरे सत्र के दौरान उनके साथ कई प्रायोगिक अभ्यास करवाए। छात्रों को लाइव रिपोर्टिंग, इंटरव्यू लेने की तकनीक, एंकरिंग के दौरान सतर्कता, और कठिन या आपातकालीन परिस्थितियों में रिपोर्टिंग

जैसे विषयों पर प्रत्यक्ष अभ्यास कराया गया। उन्होंने बताया कि मीडिया के क्षेत्र में केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि मैदान में काम करने का अनुभव और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता भी उतनी ही जरूरी है। मनोज श्रीवास्तव ने छात्रों को वॉइसओवर सुधारने, सही उच्चारण करने, और आवाज़ में आत्मविश्वास लाने के व्यावहारिक तरीके भी सिखाए। साथ ही उन्होंने यह सुझाव दिया कि छात्र अपनी स्थानीय बोली और भाषा पर काम करें, जिससे वे दर्शकों तक और प्रभावी ढंग से अपनी बात पहुंचा सकें। यह कार्यक्रम छात्रों के लिए अत्यंत शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक और अनुभवसमृद्ध रहा।

मनीष यादव
एम ए न्यू मीडिया
द्वितीय वर्ष

शैक्षणिक पुस्तकालय अनुसंधान और शिक्षण में एआई तकनीक का लाभ उठाएं विद्यार्थी- प्रो. बंसल

धर्मशाला: आचार्य रघुवीर केंद्रीय पुस्तकालय द्वारा भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक, पद्मश्री से सम्मानित प्रो. एस.आर. रंगनाथन की 133वीं जयंती पर राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस मनाया गया। इस अवसर पर माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने "शैक्षणिक बोध की अनुभूति: एएआईएक्स डिजिटल लाइब्रेरी" का उद्घाटन किया।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि "शैक्षणिक बोध की अनुभूति: एएआईएक्स डिजिटल लाइब्रेरी" नवीनतम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल्स जैसे कोपाइलट, चैटजीपीटी, स्कोपस एआई, टर्नइटिन आदि का अन्वेषण करने का अवसर प्रदान करती है जो शैक्षणिक और नए अनुभवों को नवीन स्तर तक ले जाएंगे। शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के एकीकरण ने शैक्षणिक शिक्षा को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे विद्यार्थियों के विकास के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों उत्पन्न हुई हैं।



उन्होंने हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की यात्रा के बारे में विस्तार से बताया, जिसमें विश्वविद्यालय के हितधारकों के लिए डिजिटल संसाधनों की विस्तृत श्रृंखलाओं और समूहों की सदस्यता शामिल है।

शैक्षणिक पुस्तकालय अनुसंधान और शिक्षण को समर्थन देने के मूल ध्येय को बनाए रखते हुए एआई तकनीकों का लाभ उठा सकते हैं। इस अवसर पर कुलपति के साथ एआईएक्स डिजिटल लाइब्रेरी के उद्घाटन अवसर पर कुलसचिव प्रो. नरेंद्र सांख्यान, विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष डा. विक्रम कुमार शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. जतिंदर गर्ग और वित्त अधिकारी श्रीमती प्रतिमा पठानिया मौजूद रहीं।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने पद्मश्री से सम्मानित प्रो. एस.आर. रंगनाथन की जयंती पर अपने संबोधन में वर्तमान परिदृश्य में पुस्तकालय विज्ञान के उनके पाँच नियमों पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रो. रोशन लाल शर्मा, प्रो. संजीव महाजन, प्रो. निरुपमा सिंह, प्रो. दीपांकर, प्रो. राम प्रवेश राय, प्रो. अर्चना कटोच, प्रो. बृहस्पति मिश्रा, अन्य संकाय सदस्यों, विद्वानों और शोधार्थियों - विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पुस्तकालयाध्यक्ष ने कार्यक्रम के लिए धन्यवाद-ज्ञापन दिया।

प्रो. सुनील कुमार राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय के कोर्ट में विजिटर नोमिनी नामित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं अधिष्ठाता जैविक विज्ञान स्कूल प्रो. सुनील कुमार को राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से विजिटर्स नॉमिनीज़ ऑन द कोर्ट नामित किया गया है। गौरतलब है कि प्रो. सुनील कुमार मौजूदा समय में अधिष्ठाता छात्र कल्याण का भी कार्यभार संभाले हुए हैं।



प्रकाशित हो चुके हैं। अभी तक विश्वविद्यालय में दो विद्यार्थी उनके मार्गदर्शन में पी.एचडी कर चुके हैं।

वर्ष 2019 में उन्होंने केंद्रीय विश्वविद्यालय में ज्वाइन किया था। इससे पहले वे पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय में सेवाएं दे रहे थे। उनको राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से (विजिटर्स नॉमिनीज़ ऑन द कोर्ट) नामित किए जाने पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल और अधिष्ठाता प्रो. प्रदीप कुमार ने शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

केंद्रीय विवि के प्रो. नायर रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी लन्दन के फेलो नामित



मीडिया विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला को वर्ष 2025-2026 के लिए रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी, लंदन का फेलो नियुक्त किया गया है। वह आधिकारिक तौर पर अपने नाम के बाद एफआरजीएस का उपयोग कर सकते हैं। यह यूरोप की सबसे बड़ी

धर्मशाला: प्रो. प्रदीप नायर, शोध निदेशक और विभागाध्यक्ष, न्यू

ज्योग्राफिकल सोसाइटी और दुनिया में सबसे बड़ी आरजीएस-आईबीजी में से एक है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करता है। यह सोसायटी भूवैज्ञानिक विज्ञान की व्यापक सार्वजनिक ज्ञान साझा करने के साथ-साथ अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण का कार्य करती है। रॉयल ज्योग्राफिकल

सोसाइटी (आरजीएस) का फेलो होना अत्यधिक प्रतिष्ठित विषय है, जो भौगोलिक विज्ञान और अन्वेषण में महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देता है। वर्ष 1830 में स्थापित इस सोसाइटी को इन क्षेत्रों में दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक माना जाता है।

पॉडकास्ट पहल : कुलपति महोदय के साथ विशेष संवाद से हुई शुरुआत



कक्षा में जन्मा एक विचार धीरे-धीरे आकार लेते हुए आज एक मंच बन गया है। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पत्रकारिता के छात्रों ने अपने पहले पॉडकास्ट की शुरुआत पूरे उत्साह के साथ की। इस अनोखी पहल का प्रथम अध्याय माननीय कुलपति महोदय प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल के साथ हुआ संवाद बना, जिसने न केवल इस श्रृंखला का उद्घाटन किया बल्कि छात्रों को पारंपरिक सीमाओं से परे सोचने की प्रेरणा भी दी।

पत्रकारिता के छात्रों द्वारा उठाया गया यह कदम केवल एक शैक्षणिक गतिविधि भर नहीं है, बल्कि यह उनकी रचनात्मकता और व्यावहारिक शिक्षा का प्रमाण है। डिजिटल मीडिया के इस युग में पॉडकास्ट जैसी पहल न केवल संवाद का नया माध्यम बनती है, बल्कि यह छात्रों को सीखने और अभिव्यक्त करने का एक सशक्त अवसर भी प्रदान करती है। कुलपति महोदय के साथ हुई इस विशेष बातचीत ने इस यात्रा को एक गंभीरता और ऊँचाई दी, जिससे छात्रों का उत्साह दोगुना हो गया।

अपने छात्र जीवन को याद करते हुए कुलपति महोदय ने बताया कि उस दौर में विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव था। “हम उस समय टाट लेकर स्कूल जाते थे ताकि बैठने की जगह मिल सके। ढाँचा भले ही कमजोर था, लेकिन शिक्षा और संस्कार बेहद मजबूत थे।” उन्होंने आगे कहा कि इन्हीं मूल्यों ने जीवन को दिशा दी और कठिनाइयों के बावजूद उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

- पत्रकारिता विभाग ने आधिकारिक पॉडकास्ट चैनल ‘Uncharted Tales’ की शुरुआत की। पहले एपिसोड में माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल का विशेष संवाद।
- नई शिक्षा नीति (एनईपी-2020) : अकादमिक ज्ञान से आगे बढ़कर कौशल और व्यक्तित्व विकास पर जोर।
- भारत 2047 की दृष्टि : शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनने की परिकल्पना।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली : इसे लागू करने वाला पहला केंद्रीय विश्वविद्यालय।
- व्यक्तिगत अनुभव : कुलपति ने संघर्षपूर्ण छात्र जीवन से मिली प्रेरणा साझा की।
- संदेश : पॉडकास्ट छात्रों की रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और स्टोरीटेलिंग कौशल को बढ़ावा देगा।

नई शिक्षा नीति पर विचार

संवाद के दौरान माननीय कुलपति महोदय ने नई शिक्षा नीति (एनईपी-2020) पर विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने बताया कि यह नीति छात्रों को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास, कौशल संवर्धन और व्यावहारिक जीवन की तैयारी पर भी केंद्रित है।

व्यक्तिगत अनुभव और प्रेरणा

सिर्फ नीतिगत बातों तक सीमित न रहते हुए कुलपति महोदय ने अपने व्यक्तिगत अनुभव भी साझा किए। उन्होंने अपने संघर्षों और उपलब्धियों के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को यह संदेश दिया कि जीवन में कोई भी चुनौती असंभव नहीं है, यदि हम निरंतर प्रयास और सकारात्मक सोच बनाए रखें।

भारत 2047 की परिकल्पना

कुलपति महोदय ने वर्ष 2047 तक भारत की दिशा और दशा पर भी अपने विचार साझा किए। उनका मानना है कि आने वाले 25 वर्षों में भारत शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार का वैश्विक केंद्र बनेगा। उन्होंने युवाओं को इस यात्रा में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व

संवाद का एक महत्वपूर्ण पहलू भारतीय ज्ञान प्रणाली रहा। कुलपति महोदय ने बताया कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय इस प्रणाली को लागू करने वाला पहला केंद्रीय विश्वविद्यालय है। उन्होंने इसे परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनाया।

“एक अच्छा न्यूज़ एंकर बनने के लिए क्या चाहिए” — न्यूज18 के पंकज भार्गव ने सीयूएचपी के पत्रकारिता छात्रों को दी प्रेरणा

धर्मशाला: हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) के सहयोग से, विद्यार्थियों के करियर उन्नयन हेतु “क्वॉट इट टेक्सटू टू बी ए गुड न्यूज़ एंकर” विषय पर एक विशेष व्याख्यान 30 मई 2025 को धर्मशाला स्थित धौलाधार परिसर-I के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। इस सत्र में विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों, शोधार्थियों तथा स्नातक और परास्नातक के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुख्य वक्ता के रूप में न्यूज18 इंडिया के वरिष्ठ समाचार एंकर और संपादक श्री पंकज भार्गव ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने अपने लंबे पेशेवर सफर से कई प्रेरणादायक उदाहरण देते हुए बताया कि एक साधारण प्रस्तोता और एक सफल एंकर में क्या अंतर होता है। उन्होंने कहा कि न्यूज़ एंकरिंग केवल समाचार पढ़ना नहीं है, बल्कि दर्शकों से जुड़ना, विश्वसनीयता बनाए रखना और संवेदनशीलता के साथ कहानी कहना है। श्री भार्गव ने विद्यार्थियों को ज्ञानवर्धन के लिए पुस्तक पढ़ने की आदत विकसित करने पर भी बल दिया।

अपने व्याख्यान में उन्होंने स्वर में उतार-चढ़ाव (वॉइस मॉड्यूलेशन), स्पष्ट उच्चारण, आत्मविश्वासपूर्ण बॉडी लैंग्वेज, और ब्रेकिंग न्यूज़ को बिना अतिशयोक्ति संयमित ढंग से प्रस्तुत करने की कला के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि एक एंकर को वर्तमान घटनाओं से सदैव अपडेट रहना चाहिए, आलोचनात्मक सोच विकसित करनी चाहिए, और मीडिया की प्रतिस्पर्धी दुनिया में गति और सटीकता के बीच संतुलन बनाना सीखना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने एंकरों की जिम्मेदारियों को और भी व्यापक बना दिया है, जिससे अनुकूलनशीलता और नैतिक जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

कार्यक्रम का संचालन पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव-मीडिया अध्ययन संकाय की डीन डॉ. अर्चना कटोच के नेतृत्व में किया गया। अपने स्वागत भाषण में डॉ. कटोच ने मुख्य अतिथि का हार्दिक अभिनंदन करते हुए विभाग की निरंतर शैक्षणिक पहल का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अनुभवी पेशेवरों के साथ ऐसे संवाद छात्रों को पाठ्यपुस्तक से परे व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं और उन्हें मीडिया उद्योग की वास्तविक कार्यप्रणाली की झलक देते हैं।



कार्यक्रम में विभाग के कई प्रतिष्ठित शिक्षाविद भी उपस्थित रहे, जिनमें प्रो. आदित्य कांत (सत्र समन्वयक), डॉ. हर्ष मिश्रा, डॉ. मोनिका, डॉ. चंदन आनंद, श्री वृत्तदीप, और डॉ. योगेश गुप्ता शामिल थे। उनकी उपस्थिति ने विभाग की सामूहिक भावना और छात्रों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

कार्यक्रम की एक विशेष आकर्षण रही टीम इंडिया की जानी-मानी प्रशंसक सुश्री शांति प्रिया गोयल की उपस्थिति, जिनकी ऊर्जावान भागीदारी ने कार्यक्रम को और जीवंत बना दिया। उनके उत्साही संवाद ने विद्यार्थियों के बीच उत्साह का वातावरण उत्पन्न किया।

उन्होंने कहा कि एक सफल एंकर वही है जो केवल समाचार न पढ़े, बल्कि दर्शकों से जुड़कर विश्वसनीयता, संवेदनशीलता और प्रभावी संवाद का सेतु बनाए। उन्होंने

बताया कि एंकरिंग के लिए पुस्तक पढ़ने की आदत, सामयिक ज्ञान, और स्पष्ट सोच आवश्यक हैं, क्योंकि यही गुण किसी प्रस्तोता को असाधारण बनाते हैं। उन्होंने छात्रों को वॉइस मॉड्यूलेशन, शुद्ध उच्चारण, आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुति और ब्रेकिंग न्यूज़ की स्थिति में संयम बनाए रखने जैसी बारीकियों पर ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में एंकर की भूमिका केवल स्क्रीन तक सीमित नहीं रही अब उन्हें सोशल मीडिया और ऑनलाइन दर्शकों के प्रति भी उत्तनी ही नैतिक और जिम्मेदार भूमिका निभानी पड़ती है। उन्होंने विभाग के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सीयूएचपी निरंतर अपने छात्रों को उद्योग विशेषज्ञों से सीखने के अवसर उपलब्ध करा रहा है।

एक विशेष आकर्षण रहीं सुश्री शांति प्रिया गोयल, जो टीम इंडिया की प्रसिद्ध प्रशंसक हैं। उनकी ऊर्जा और उत्साह ने माहौल को जीवंत बना दिया और छात्रों में जोश भर दिया। श्री भार्गव ने धैर्यपूर्वक सभी प्रश्नों का उत्तर दिया और कहा कि “एक सच्चा पत्रकार वही है जो जिज्ञासु, ईमानदार और जिम्मेदार हो।”

सत्र के अंत में प्रश्नोत्तर दौर हुआ, जिसमें छात्रों ने श्री भार्गव से कई रोचक प्रश्न पूछे। प्रश्नों में लाइव प्रसारण के दौरान घबराहट पर काबू पाने, संवेदनशीलता और सनसनीखेजी के बीच संतुलन, गति और सटीकता बनाए रखने, और टीवी, डिजिटल तथा रेडियो पत्रकारिता में करियर अवसरों जैसे विषय शामिल थे। श्री भार्गव ने हर प्रश्न का गंभीरता और सादगी से उत्तर देते हुए विद्यार्थियों को ईमानदारी, जिज्ञासा और धैर्य के साथ अपने करियर में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का समापन आयोजन समिति द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि, संकाय सदस्यों और छात्रों के योगदान को सराहा गया। यह व्याख्यान न केवल ज्ञानवर्धक रहा, बल्कि छात्रों के भीतर उत्साह और पेशेवर उत्कृष्टता की भावना भी जगाने में सफल रहा।

नवीन ऊँचाइयों की ओर बढ़ते कदम



परफॉर्मेंस) में यह विश्वविद्यालय 199.9 अंकों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से थोड़ा ही पीछे रहते हुए दूसरे स्थान पर रहा, जो विश्वविद्यालय के बढ़ते अनुसंधान कौशल का स्पष्ट संकेत है। विश्वविद्यालय का H-Index 63, 2,000 से अधिक शोध प्रकाशन और 35,000 से अधिक संदर्भ (साइटेशंस) हैं, जिसके परिणामस्वरूप इसे पर्यावरणीय रसायन विज्ञान और नाभिकीय भौतिकी जैसे क्षेत्रों में राष्ट्रीय पहचान मिली है। हि.प्र.के.वि. हिमाचल प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है जिसे एन ए ए सी द्वारा ए प्लस ग्रेड प्राप्त हुआ है और इसे यूजीसी से ग्रेडेड स्वायत्तता भी प्रदान की गई है जो इसके शैक्षणिक उत्कृष्टता और प्रशासनिक दक्षता में विश्वास का प्रतीक है।

अपनी उपलब्धियों तक ही सीमित न रहते हुए, कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के कुशल नेतृत्व में हि.प्र.के.वि. ने प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक साहसिक कदम उठाया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की भावना के अनुरूप, विश्वविद्यालय ने दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सीडीओई) की स्थापना की है एक दूरदर्शी पहल, जिसका उद्देश्य भौतिक सीमाओं से परे शिक्षा का विस्तार करना और भारत को 2040 तक 50% सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) प्राप्त करने में सहायता देना है। यह केवल एक डिजिटल उपलब्धि ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक मिशन है। यह केंद्र देश के सुदूर और हाशिए पर पड़े वंचित समुदायों तक शिक्षा पहुँचाने के लिए समर्पित है। आधुनिक मीडिया प्रयोगशालाओं, वर्चुअल कक्षाओं और ई-ट्यूटोरियल्स से युक्त यह केंद्र मुक्त एवं दूरवर्ती अधिगम (ओडीएल) और ऑनलाइन अधिगम दोनों माध्यमों से पाठ्यक्रम संचालित करता है। इसका विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली और मॉड्यूलर पाठ्यक्रम वैश्विक मानकों के समकक्ष हैं। तकनीक और समावेशिता के एकीकरण के माध्यम से, हि.प्र.के.वि. सीधे “विकसित भारत @2047” की राष्ट्रीय भविष्य दृष्टि को साकार करने में योगदान दे रहा है एक ऐसा भविष्य जो ज्ञान, कौशल और अवसरों से प्रेरित हो। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल का कहना है कि “हमारा मिशन हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को सिर्फ एक विश्वविद्यालय ही नहीं, बल्कि सुलभ और सार्थक उच्च शिक्षा का एक आदर्श बनाना रहा है”, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व और नवाचारों ने संस्थागत उत्कृष्टता के नए मानदंड स्थापित किए हैं। उनके नेतृत्व में हि.प्र.के.वि. ने अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ कार्यनीतिक साझेदारियाँ

स्थापित की हैं, जिससे यह एक युवा परंतु सशक्त अनुसंधान संस्था के रूप में उभरा है। 2010 में स्थापित विश्वविद्यालय के उद्यमिता और नवाचार केंद्र ने स्थानीय संसाधनों और क्षेत्रीय क्षमताओं के आधार पर एक सशक्त स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी-तंत्र विकसित किया है। आज, हि.प्र.के.वि. के पूर्व-छात्र प्रौद्योगिकी, व्यापार, पर्यटन और कृषि-उद्यमिता के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं, जो दर्शाता है कि विश्वविद्यालय का शोध और नवाचार एजेंडा जीवन, आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रत्यक्ष तौर पर कैसे प्रभावित कर रहा है। हि.प्र.के.वि. में शोध केवल प्रयोगशालाओं तक ही सीमित नहीं है - यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का उत्प्रेरक है।

हालांकि अब तक हि.प्र.के.वि. की उपलब्धियाँ इसके अस्थायी परिसरों से आई हैं, परंतु अब यह स्थिति बदलने जा रही है। भारत सरकार ने देहरा और जदरंगल में स्थायी परिसरों के विकास के प्रस्ताव को मंजूरी दी है, जो हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के बढ़ते शैक्षणिक और अनुसंधान पारिस्थितिकी-तंत्र के लिए बहुप्रतीक्षित भौतिक आधार प्रदान करेगा। ये परिसर न केवल संस्थागत क्षमता का विस्तार करेंगे, बल्कि उस विश्वविद्यालय को वास्तुशिल्पीय अभिव्यक्ति भी प्रदान करेंगे जिसने पहले ही अपनी बौद्धिक क्षमता सिद्ध कर दी है। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की यह यात्रा इस बात का प्रमाण है कि शैक्षणिक उत्कृष्टता विशाल अवसरचना पर नहीं, बल्कि दूरदर्शी नेतृत्व, मानव पूंजी और कार्यनीतिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। जैसे-जैसे हि.प्र.के.वि. अपने स्थायी परिसरों की ओर अग्रसर हो रहा है और अपने डिजिटल स्वरूप का विस्तार करता जा रहा है, यह समावेशी, प्रौद्योगिकी-संचालित और अनुसंधान-आधारित शिक्षा का एक राष्ट्रीय मॉडल बनने के लिए तैयार है - यह प्रमाणित करते हुए कि शिक्षा का भविष्य वास्तव में हिमालय की गोद से भी निसृत हो सकता है।

प्रो. आदित्य कांत
मुख्य संपादक

अंग्रेजी विभाग द्वारा 26वें मेलो अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन



शैक्षणिक सत्र की शुरुआत प्रो. इप्पफत मकबूल, अंग्रेजी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के आधार व्याख्यान से हुई, जिसका विषय था “निर्भरता, मुक्ति और रचनात्मकता: अनुकूलन की शक्ति को पुनः प्राप्त करना” (डिपेन्डेन्स, लिबरेशन, एंड क्रिएटिविटी: रिक्लेमिंग द पावर ऑफ अडैप्टेशन)। सत्र की अध्यक्षता प्रो. टी. एन. धर, वरिष्ठ प्रोफेसर, शूलिनी विश्वविद्यालय, सोलन ने की। प्रो. इप्पफत ने यह विवेचना की कि अनुकूलन केवल पूर्ववर्ती कथाओं पर निर्भरता का साधन ही नहीं है, बल्कि यह एक मुक्तिदायी और सृजनात्मक क्रिया भी है, जो कहानियों को नए सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक परिप्रेक्ष्यों में पुनः कल्पित करती है। श्री सुमंत सरकार, निदेशक और संरक्षक (रंगमंच और फिल्म), और द मिस्टिक माइंड्स - धर्मशाला में प्रारंभ एक रचनात्मक संस्था के निदेशक द्वारा एक आमंत्रित व्याख्यान दिया गया। वक्ता ने “दृश्य अनुकूलन की कला: पन्नों से मंच और स्क्रीन तक” (दि आर्ट ऑफ विजुअल अडैप्टेशन: फ्रॉम पेज टू स्टेज एंड स्क्रीन) विषय पर विचार-विमर्श किया। अपने रंगमंच और फिल्म अनुभव का उपयोग करते हुए, उन्होंने साहित्यिक पाठों को प्रदर्शन और दृश्य माध्यमों में रूपांतरित करने में आने वाली चुनौतियों और रचनात्मक कार्यनीतियों का विश्लेषण किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी द्वारा “पूर्व और पश्चिम में अनुकूलन: साहित्यिक और सांस्कृतिक पद्धति” (अडैप्टेशन ईस्ट एंड वेस्ट: लिटरेरी एंड कल्चरल पैक्टिसेज़) विषय पर इसाक सेक्वेरा स्मृति विशेष व्याख्यान दिया गया। सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कृष्णन उन्नी.पी. ने की। अपने व्याख्यान में, प्रोफेसर त्रिवेदी ने एक तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने प्रामाणिकता, नवाचार और ग्रहणशीलता के बारे में साझा चिंताओं को बरकरार रखते हुए, सांस्कृतिक संदर्भों में अनुकूलन पद्धतियों के अंतर का विश्लेषण किया। इसाक सेक्वेरा स्मृति पुरस्कार पत्र प्रस्तुतियाँ दिन के अंतिम शैक्षणिक सत्र में आयोजित की गईं, जिसकी अध्यक्षता विश्वभारती विश्वविद्यालय की प्रोफेसर देबराती बंद्योपाध्याय ने की। इस सत्र में तीन युवा विद्वानों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

गुंजन अरोड़ा (पीएच.डी. शोधार्थी, एलपीयू, जालंधर) ने “एनिमेटेड इंटेंशनस: रिलिजस अप्रोप्रीएशन एंड द ट्रेवेस्टी ऑफ अडैप्टेशन” विषय पर वक्तव्य दिया। स्निग्धा भट्ट (सहायक प्राध्यापक, सेंट बीड्स कॉलेज, शिमला) ने “इंटरसिमियोटिक जर्नी: विजुअल एंड थीमैटिक ट्रांसफॉर्मेशन फ्रॉम अमृता प्रीतम्स पिंजर टू चंद्रप्रकाश द्विवेदीज़ सिनेमैटिक इंटरप्रिटेशन” पर चर्चा की। सृष्टि शर्मा (पीएच.डी. शोधार्थी, आईपीयू, दिल्ली) ने बियॉन्ड द बुक्स: एथिक्स, पॉलिटिक्स, एंड विजुअल पावर इन द अडैप्टेशन ऑफ गेम ऑफ थ्रोन्स” विषय पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया। शोध-पत्रों की प्रस्तुति के क्रम में विनियोग, राजनीति, नैतिकता और परंपरा एवं नवाचार के बीच संवाद स्थापित करने में अनुकूलन की ज़िम्मेदारियों पर जीवंत चर्चाएँ हुईं। सृष्टि शर्मा ने आईएसएम पुरस्कार जीता, जबकि गुंजन अरोड़ा को प्रशंसा-पत्र से सम्मानित किया गया। 110 से अधिक शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए और दस से अधिक देशों से आए प्रतिनिधियों ने समानांतर सत्रों में अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. हेम राज बंसल
सह-प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग

पाठकों के पत्र

हमारे चारों ओर की पहाड़ियाँ अब शांत नहीं हैं; वे भूस्खलन, बाढ़ और बदलते मौसम के माध्यम से मदद के लिए पुकार रही हैं। हमारी बढ़ती लापरवाही, चाहे वह प्लास्टिक कचरा हो, वनों की कटाई हो या अनियोजित निर्माण, धीरे-धीरे हिमाचल के प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर रही है। अब समय आ गया है कि हम पहाड़ियों को केवल पर्यटक स्थल के रूप में नहीं देखें बल्कि उन्हें जीवित पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में सम्मान दें। अपशिष्ट कम करने, पेड़ लगाने और जागरूकता फैलाने के छोटे-छोटे प्रयास हमारे द्वारा किए गए नुकसान को ठीक करने में मदद कर सकते हैं। पहाड़ियाँ बात कर रही हैं; सवाल यह है, क्या हम सुन रहे हैं?

सादर,

सिम्रन पाटियाल एवं मुस्कान ठाकुर
एमएजेएमसी आन सेमेस्टर

अंग्रेजी विभाग ने हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में 19-21 सितंबर 2025 तक “अनुकूलन में चुनौतियाँ: परंपरा और नवाचार का अंतर्संबंध” (चैलेंजेज़ इन अडैप्टेशन: इंटरप्ले ऑफ ट्रेडिशन एंड इनोवेशन) विषय पर 26वें मेलो (मेलो) (द सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ द मल्टी-एथनिक लिटरचर्स ऑफ द वर्ल्ड) (विश्व बहु-नृजातीय साहित्य अध्ययन सोसायटी) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। कुलसचिव प्रो. नरेंद्र कुमार सांख्यान भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सम्मेलन के संयोजक प्रो. रोशन लाल शर्मा ने प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करते हुए विषय की महत्ता पर प्रकाश डाला और बताया कि किस प्रकार अनुकूलन एक साहित्यिक और सांस्कृतिक पद्धति के रूप में विरासत में मिली परंपराओं और नवीन पुनर्व्याख्याओं के बीच निरंतर संवाद स्थापित करता है। मेलो की अध्यक्ष प्रो. मंजू जैदका ने प्रतिनिधियों को संबोधित किया और सम्मेलन के विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने स्थापना के बाद के वर्षों में मेलो की यात्रा का भी उल्लेख किया और बताया कि यह किस प्रकार शिक्षार्थियों के लिए यह एक जीवंत मंच के रूप में विकसित हुआ। माननीय कुलपति ने सभा को संबोधित करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि साहित्यिक शोध और आदान-प्रदान के लिए वैश्विक मंच प्रदान करने में मेलो का योगदान कितना स्थायी और महत्वपूर्ण रहा है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में 20-क्रेडिट “अनिवार्य स्किल कोर्स” का हिस्सा होगा

धर्मशाला। केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि “यह अत्यंत गौरव का विषय है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप, एक अत्यंत महत्वपूर्ण और नवाचारपूर्ण शैक्षणिक पहल की ओर कदम बढ़ाया है। विश्वविद्यालय द्वारा 2025-26 शैक्षणिक सत्र से 20 क्रेडिट का एक अनिवार्य स्किल कोर्स सभी विद्यार्थियों के लिए प्रारम्भ किया जा रहा है। यह कोर्स विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग, प्रत्येक स्कूल तथा सभी अध्ययन केंद्रों के शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक होगा। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान की पुस्तकीय परिधि में सीमित रखना है, अपितु उन्हें समाज के वास्तविक जीवन, परंपराओं, पर्यावरण, शिल्प, प्रशासन और संस्कृति से गहराई से जोड़ना भी है।

यह पाठ्यक्रम लोक परंपरा, सांस्कृतिक विविधता, लोक साहित्य, पर्यावरणीय ज्ञान, हस्तकला, पर्यटन तथा जनसामान्य की आजीविका संबंधी व्यवस्थाओं के व्यावहारिक अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों को समाज का सहभागी बनाना चाहता है। इसके माध्यम से छात्र अपने गृहनगर, गांव, समुदाय और उनके अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी जड़ों को समझते हुए वैश्विक सोच का निर्माण करेंगे।

प्रो. बंसल ने सुझाया कि इस पाठ्यक्रम में उदाहरण स्वरूप “पर्यावरण और स्थायित्व”, “लोक साहित्य”, “लोककला और हस्तशिल्प”, “लोक यायावरी और सांस्कृतिक पर्यटन”, “लोक प्रशासन”, “लोक प्रबंधन”, “लोक

शास्त्र” और “लोक नाट्य” जैसे विषय सम्मिलित किए गए हैं, जिनमें 2 और 4 क्रेडिट के कोर्स होंगे। इसके अतिरिक्त हमने कुछ नई विषयवस्तुओं को भी सम्मिलित किया है जिनका सीधा सम्बन्ध समाज की भूमि से है; जैसे स्थानीय स्वास्थ्य परंपराएँ, महिला स्व-सहायता समूहों की भूमिका, स्थानीय व्यंजन और पोषण, सामुदायिक सम्वाद, जनजातीय जीवन और रीति-नीति,



स्थानीय आपदाएँ और सामाजिक पुनर्निर्माण, ग्राम योजना, देसी खेल और श्रमदान एवं नैतिक शिक्षा। कुलपति ने कहा कि इस प्रकार का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को केवल डिग्री प्रदान नहीं करेगा, बल्कि उन्हें स्थानीय नेतृत्वकर्ता, सामाजिक उद्यमी और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करेगा। हमारा लक्ष्य है कि विश्वविद्यालय से निकलने वाला प्रत्येक विद्यार्थी

अपने परिवेश के प्रति उत्तरदायी हो, उसके पास पारम्परिक और आधुनिक ज्ञान का संतुलन हो, और वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाला सक्षम साधक बने। इस कार्यक्रम की शिक्षण-पद्धति पूर्णतः व्यवहारिक और सहभागी होगी।

जिसमें विद्यार्थियों को फील्ड विजिट, समुदाय सम्वाद, इंटर्नशिप, परियोजना कार्य, लोककलाकारों व पारम्परिक जानकारों के साथ सम्वाद और प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। मूल्यांकन में भी पारंपरिक परीक्षा प्रणाली के साथ-साथ फील्ड रिपोर्ट, समूह कार्य, प्रस्तुति और लोक-अभिनयन जैसे घटकों को प्रमुखता दी जाएगी। यह पाठ्यक्रम न केवल विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम बनेगा, बल्कि विश्वविद्यालय और समुदाय के मध्य एक जीवंत और संवेदनशील सेतु की भूमिका भी निभाएगा। शिक्षा को समाज के साथ जोड़ने का यह प्रयास स्थानीयता और वैश्विकता दोनों की समन्वयकारी भूमिका को सशक्त करेगा।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि यह कोर्स ‘शिक्षा के माध्यम से समाज निर्माण’ की दिशा में विश्वविद्यालय की एक ऐतिहासिक पहल है। मैं समस्त संकाय प्रमुखों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम विशेषज्ञों को इस विचार की मूर्तता के लिए निष्ठा से कार्य करने के लिए आवाह्न करता हूँ। हमारा यही ध्येय रहा है कि शिक्षा वही सार्थक है, जो समाज को छूती है, उसे गढ़ती है और संवारती है।

गोल्ड मेडलिस्ट से वैश्विक वैज्ञानिक: डॉ. मनप्रीत अरोड़ा स्टैनफोर्ड की शीर्ष 2% सूची में शामिल



बोर्ड टॉपर और गोल्ड मेडलिस्ट के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन से लेकर वैश्विक शैक्षणिक मंच पर उल्लेखनीय पहचान बनाने तक, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) के वाणिज्य एवं प्रबंधन

अध्ययन विद्यालय की डॉ. मनप्रीत अरोड़ा को स्टैनफोर्ड/एल्सेवियर की शीर्ष 2% वैज्ञानिक सूची 2025 में शामिल किया गया है।

19 सितंबर, 2025 को जारी यह प्रतिष्ठित वैश्विक रैंकिंग, विभिन्न विषयों में दुनिया भर के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की पहचान करती है। इस मान्यता का मूल्यांकन मानकीकृत उद्धरण मेट्रिक्स और समग्र सी-स्कोर संकेतक पर आधारित है, जो उद्धरणों, लेखकीय पदों और सह-लेखकीय समायोजनों पर सावधानीपूर्वक विचार करता है। यहाँ ज़ोर केवल मात्रा पर नहीं, बल्कि सार्थक योगदान और प्रभावशाली शोध पर है, जो डॉ. अरोड़ा की विद्वत्तापूर्ण उत्कृष्टता को रेखांकित करता है। अरोड़ा को अर्थशास्त्र और व्यवसाय के क्षेत्र में, व्यवसाय और प्रबंधन में उनकी उप-क्षेत्र विशेषज्ञता के साथ, मान्यता प्राप्त हुई है। इस वैश्विक रैंकिंग में उनका शामिल होना उनकी सतत विद्वता, प्रभावशाली शोध और अकादमिक नेतृत्व का एक मजबूत प्रमाण है। 70 स्कोपस-इंडेक्स पेपर और 13 संपादित पुस्तकों सहित 120 से अधिक प्रकाशनों के प्रभावशाली रिकॉर्ड के साथ, डॉ. अरोड़ा ने खुद को एक अग्रणी अकादमिक आवाज़ के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं (स्कोपस, वेब ऑफ साइंस और कैटेगरी जर्नल्स) में 35 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और दुनिया के कुछ सबसे प्रतिष्ठित प्रकाशकों, जिनमें एमराल्ड, रूटलेज, स्पिंगर नेचर, सीएबीआई और एप्पल एकेडमिक प्रेस (एएपी) शामिल हैं, के साथ 75 से अधिक पुस्तक अध्यायों में योगदान दिया है। उनका शोध माइक्रोफाइनेंस, सतत विकास लक्ष्य

(एसडीजी), कॉर्पोरेट संचार, रणनीतिक प्रबंधन और गुणात्मक अनुसंधान विषयों के क्षेत्रों में फैला हुआ है, जो न केवल अकादमिक विमर्श को समृद्ध करता है 2024 में, उन्होंने सह-प्रधान अन्वेषक के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) पर ₹10 लाख मूल्य की एक अल्पकालिक आईसीएसएसआर परियोजना सफलतापूर्वक पूरी की।

उसी वर्ष, उन्हें सह-पीआई के रूप में ₹20 लाख मूल्य की एक प्रमुख आईसीएसएसआर शोध परियोजना भी प्रदान की गई, जो आदिवासी महिला उद्यमियों पर केंद्रित थी, जो सामाजिक रूप से प्रासंगिक, समावेशी और परिवर्तनकारी अनुसंधान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्हें सीयूएचपी द्वारा 2024 के सर्वश्रेष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार से

भी अग्रणी रही हैं।

उन्होंने 60 से ज़्यादा वीडियो व्याख्यान और 35 से ज़्यादा ऑनलाइन ई-सामग्री तैयार की हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उच्च-गुणवत्ता वाले शैक्षिक संसाधन पारंपरिक सीमाओं से परे शिक्षार्थियों तक पहुँचें। उनकी विशेषज्ञता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता मिली है, जैसा कि अल जज़ीरा के साथ उनके

युवा शिक्षार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा:

डॉ. अरोड़ा की यात्रा दर्शाती है कि शैक्षणिक सफलता केवल संख्याओं से नहीं, बल्कि जुनून, दृढ़ता और उद्देश्य से परिभाषित होती है। उनकी कहानी युवा मस्तिष्कों के लिए एक प्रकाश स्तंभ है जो उन्हें जिज्ञासा को अपनाने, चुनौतियों का डटकर सामना करने और ऐसे शोध को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है जो शैक्षणिक और सामाजिक दोनों तरह से प्रभाव पैदा करे। वह इस विश्वास का प्रतीक हैं कि सच्ची विद्वता सीमाओं से परे होती है, समुदायों का उत्थान करती है और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करती है।

स्टैनफोर्ड/एल्सेवियर की शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची 2025 में उनका स्थान पाना सिर्फ एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है; यह अकादमिक समुदाय के लिए गौरव का स्रोत है और दुनिया भर के छात्रों, सहकर्मियों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। शिक्षा जगत, शोध और सामाजिक वकालत में उनका बहुमुखी योगदान ज्ञान को आगे बढ़ाने, समावेशी विकास को बढ़ावा देने और सतत विकास को बढ़ावा देने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ. अरोड़ा वास्तव में इस बात की प्रतीक हैं कि कैसे ईमानदारी और दूरदर्शिता के साथ की गई विद्वता समाज में सार्थक बदलाव ला सकती है।



सम्मानित किया गया। उत्कृष्टता की उनकी यात्रा लगातार अकादमिक प्रतिभा से चिह्नित रही है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से स्नातक में स्वर्ण पदक विजेता और मेरिट धारक, वह अपनी 12वीं कक्षा में बोर्ड टॉपर और स्नातकोत्तर में डिस्टिंक्शन धारक थीं। 23 से अधिक वर्षों के शिक्षण अनुभव के साथ, उन्होंने कक्षाओं और शैक्षणिक मंचों को समृद्ध किया है, साथ ही डॉक्टरेट और स्नातकोत्तर छात्रों का मार्गदर्शन भी किया है। एक मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका अगली पीढ़ी के विद्वानों को प्रेरित करती रहती है, और उन्हें उसी प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ मार्गदर्शन देती है जो उन्होंने अपने पूरे करियर में दिखाया है। शोध और शिक्षण के अलावा, डॉ. अरोड़ा डिजिटल शिक्षाशास्त्र में

स्किल डेवलपमेंट कर युवाओं को रोजगार से जोड़ेगी सेंट्रल यूनिवर्सिटी

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और एनआईआईटी फाउंडेशन के बीच ऐतिहासिक समझौता: छात्रों को मिलेगा मुफ्त कौशल विकास और रोजगार का अवसर

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) ने आज एनआईआईटी फाउंडेशन दिल्ली के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य छात्रों को निःशुल्क कौशल विकास पाठ्यक्रम प्रदान करना और उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों से जोड़ना है। इस अवसर पर प्राध्यापकों के लिए एक फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस पहल को छात्रों के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने कहा कि सीयूएचपी छात्रों को केवल शिक्षा प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ रोजगार के लिए भी तैयार कर रहा है। इसी कड़ी में एनआईआईटी फाउंडेशन के सहयोग से छात्रों को विभिन्न कौशल विकास पाठ्यक्रम करवाए जाएंगे।

बुधवार को केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश और प्रदेश के विभिन्न प्राध्यापकों के लिए एक यूथ स्किल प्रोग्राम कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें इन कोर्सेज को छात्रों के बीच प्रभावी ढंग से ले जाने के तरीकों के बारे में बताया गया। प्रोफेसर बंसल ने बताया कि इन कोर्सेज में छात्रों की आईटी स्किल,



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), एमएस ऑफिस, डिजिटल मार्केटिंग, इंटरव्यू की तैयारी सॉफ्ट स्किल, एडवांस एक्सेल सहित अन्य समग्र विकास के पाठ्यक्रम शामिल होंगे। ये पाठ्यक्रम 15 दिन से एक माह तक की अवधि के होंगे, जिन्हें छात्र अपनी पढ़ाई के साथ-साथ भी कर सकते हैं।

इस साझेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि एनआईआईटी फाउंडेशन इन कोर्सेज को पूरा करने वाले छात्रों के लिए विभिन्न कंपनियों के साथ संपर्क स्थापित कर प्लेसमेंट की सुविधा भी प्रदान करेगा।

इस अवसर पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा ने एनआईआईटी फाउंडेशन के साथ मिलकर छात्रों के करियर के लिए विभिन्न क्षेत्रों में काम करने का सुझाव दिया और भविष्य में भी प्राध्यापकों के लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस कार्यक्रम में एनआईआईटी संस्था से क्षेत्रीय प्रमुख श्री विजय कुसुम्बे, राज्य प्रमुख अमित बक्शी, एवं ईशा आहूजा, प्रियंका शाह उपस्थित रहे। केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. श्वेता शर्मा, समाज कार्य विभाग ने इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करें शोधार्थी- प्रो. बंसल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने 2-6 जून, 2025 तक आईआईटी गुवाहाटी के सहयोग से एक सप्ताह का संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) आयोजित किया है। एफडीपी का विषय 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग' था। समापन के दिन धर्मशाला के धौलाधार कैम्पस- I के सेमिनार हॉल में एक समापन समारोह आयोजित किया गया। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने समारोह की अध्यक्षता की। यूजीसी के संयुक्त सचिव डॉ. गंभीर सिंह और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के निदेशक श्री सुभाष सरू इस अवसर पर विशेष अतिथि थे। कुल 104 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया और 5 दिनों तक सुबह 9.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक कार्यक्रम में भाग लिया समापन सत्र की शुरुआत मुख्य अतिथि और अन्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ हुई, जिसके बाद सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत का गायन हुआ। इसके बाद कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ललित मोहन शर्मा ने मुख्य अतिथि और अन्य अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम को वैचारिक शिक्षा एवं व्यावहारिक अनुभव के साथ

जोड़ने के लिए सोच-समझकर संरचित किया गया था, जिससे यह सभी उपस्थित लोगों के लिए एक अच्छी तरह से सीखने की यात्रा बन गई। उद्घाटन के दिन, कार्यक्रम की शुरुआत एआई और एमएल के अवलोकन के साथ हुई प्रतिभागियों ने वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के साथ-साथ पर्यवेक्षित सुदृढ़ीकरण को सीखा। हैंड्स-ऑन लैब सत्र में बुनियादी डेटा अन्वेषण और पूर्व प्रसंस्करण का परिचय दिया गया। दूसरे दिन की गतिविधियों में प्रतिगमन और वर्गीकरण तकनीकों का उपयोग करके भविष्य कहनेवाला मॉडल

बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया इसके अलावा, प्रतिभागियों को अनसुपरवाइज्ड लर्निंग और एनसेंबल विधियों की शक्ति से परिचित कराया गया। इस दिन नैवे बेयस, न्यूरल नेटवर्क, केएनएन, क्लस्टरिंग तकनीक-के-मीन्स और के-मेडोइड क्लस्टरिंग को कवर किया गया। डाइमेंशनलिटी रिडक्शन के लिए पीसीए ने सीखने की एक और परत जोड़ी। दिन के लैब सेशन ने वास्तविक डेटासेट के साथ व्यावहारिक प्रयोग के माध्यम से इन अवधारणाओं को जीवंत किया। एफडीपी के अंतिम दिन ने नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के द्वार खोले। टेक्स्ट और वेब माइनिंग से लेकर सेंटीमेंट एनालिसिस और वर्ड क्लाउड तक प्रतिभागियों ने पता लगाया कि मशीनें भाषा को कैसे समझती

हैं और उसका विश्लेषण करती हैं। हैंड्स-ऑन सेशन ने इन्हें वास्तविक दुनिया के डेटा पर लागू करने का एक मजेदार और इंटरैक्टिव तरीका पेश किया। समापन दिवस भविष्यवादी और प्रेरणादायक दोनों था। इसने कंप्यूटर विज्ञान, इमेज प्रोसेसिंग और न्यूरल नेटवर्क की मूल बातें पेश कीं। प्रतिभागियों को डीप लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग, जेनरेटिव एआई और बड़े भाषा मॉडल जैसे उभरते क्षेत्रों का भी अवलोकन मिला। कार्यक्रम समूह गतिविधियों के साथ एक उच्च नोट पर समाप्त हुआ जहाँ प्रतिभागियों को उनके द्वारा सीखी गई चीजों के आधार पर मिनी-प्रोजेक्ट दिए गए। एफडीपी केवल व्याख्यान और प्रयोगशालाओं के बारे में नहीं था, यह नए विचारों को जगाने, सहयोग को प्रोत्साहित करने और शिक्षकों को उनके शैक्षणिक और शोध प्रयासों में एआई और एमएल को अपनाने के लिए सशक्त बनाने के बारे में था। समापन सत्र में, सीयूएचपी के माननीय कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल ने भाग लेने

बनने के लिए आगे बढ़ाना चाहिए केंद्र सरकार ने AI को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इंडिया, सभी के लिए एआई आदि जैसे कई कदम उठाए हैं। भारत में एआई को विकसित करने और आम जनता के विकास के लिए इसका उपयोग करने की बहुत संभावना है। एआई स्वास्थ्य, सेवा क्षेत्र, शिक्षा, कृषि और पूरे देश में स्मार्ट शहरों की स्थापना जैसे कई क्षेत्रों में बदलाव ला सकता है। यह उम्मीद की जाती है कि एआई राष्ट्रीय विकास के सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी पहलुओं में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। हालाँकि, विभिन्न उद्देश्यों के लिए एआई का उपयोग करते समय सावधानी बरतना अनिवार्य हो जाता है। भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है और एक तेजी से बढ़ती आर्थिक शक्ति है। हम एआई क्रांति के विकास में बहुत योगदान दे सकते हैं। नीति आयोग ने एआई के संदर्भ में एक नीति तैयार की है जो इस बात पर केंद्रित है कि हम इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं नीति आयोग ने एआई के संदर्भ में एक नीति तैयार की है जो इस बात पर केंद्रित है कि हम भारत



के सामाजिक और समावेशी विकास के लिए परिवर्तनकारी तकनीकों का उपयोग कैसे कर सकते हैं। अब एआई को राष्ट्रीय रणनीतिक नीति निर्माण और कार्यान्वयन के एक सहायक तकनीक के रूप में लिया जा सकता है। एआई और एमएल के उपयोग के संदर्भ में पहुंच, क्षमता, विशेष विशेषज्ञता की कमी और असमानता कुछ चुनौतियां हैं जिनका सामना करना पड़ेगा। भारत

वाले संकाय और पीएचडी विद्वानों को संबोधित किया और वर्तमान दुनिया में एआई और एमएल के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने संकाय और पीएचडी विद्वानों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया। यह उल्लेख किया गया कि विकसित भारत @2047 की दृष्टि केवल विकास के लिए उन्नत अनुसंधान के साथ ही साकार हो सकती है। भारत युवाओं का देश है और युवाओं को कुशल और ऊर्जावान शक्ति में बदलने का समय आ गया है। भारत की युवा आबादी की क्षमता को आर्थिक विकास में योगदान देने की अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए और भारत को दुनिया का ज्ञान केंद्र और आर्थिक पावर हाउस

जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए एआई को प्रभावी ढंग से लागू करने और उन्नत अनुसंधान, नवाचार और जिम्मेदार एआई के विकास की मदद से सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान खोजने का समय आ गया है। ऐसे विचारोत्तेजक विचारों के साथ कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल ने अपना भाषण समाप्त किया। अंत में सीयूएचपी, धर्मशाला के डीन अकादमिक ने प्रतिभागियों और आयोजन समिति के सदस्यों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। समारोह का समापन प्रोफेसर मनोज कुमार सक्सेना, डीन स्कूल ऑफ एजुकेशन, सीयूएचपी धर्मशाला द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

नवाचार और अनुसंधान की ओर विश्वविद्यालय का एक और कदम एएनआरएफ की ओर से 10 करोड़ मंजूर केंद्रीय विवि को आईआईटी रोपड़ के सहयोग से मिली प्रतिष्ठित परियोजना

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रोपड़ के सहयोग से अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) की पेय र (उन्नत अंतः विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना) पहल के तहत एक प्रतिष्ठित परियोजना से सम्मानित किया गया है।



इस परियोजना को आधिकारिक रूप से मंजूरी मिल गई है, जिसमें हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को ₹10 करोड़ का पर्याप्त वित्त पोषण प्राप्त हुआ है। इस संबंध में आयोजित प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ), भारत सरकार के एक सांविधिक निकाय ने 'त्वरित नवाचार और अनुसंधान के लिए भागीदारी (पीएआईआर)' नामक एक नया कार्यक्रम शुरू किया है,

जिसका उद्देश्य उच्च शिक्षा के उन संस्थानों की शोध क्षमता को बढ़ावा देना है। जहाँ अनुसंधान अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन जिनमें अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता है, उन्हें बढ़ावा देना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इसके साथ ही कार्यक्रम के उद्देश्यों में; पर्याप्त प्रभाव और परिणाम के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी अनुसंधान का समर्थन करना; विविध संस्थानों के बीच सफल और उत्पादक सहयोगी नेटवर्क को बढ़ावा देना; और संस्थानों की उन्नति को बढ़ावा देना शामिल है।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने मूल रूप से 11 करोड़ का बजट प्रस्तावित किया था, और स्वीकृत राशि विश्वविद्यालय की शोध महत्वाकांक्षाओं के लिए मजबूत समर्थन की पुष्टि करती है। अनुदान में पाँच प्रमुख शोध उपकरणों और कई शैक्षणिक और शोध गतिविधियों के लिए वित्त पोषण शामिल है। केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. राजेश कुमार, डीन, स्कूल ऑफ फिजिकल एंड मैटेरियल साइंसेज, परियोजना के प्रमुख अन्वेषक (पीआई) के रूप में कार्य कर रहे हैं। सह-प्रमुख अन्वेषकों (को-पीआई) में तीन अलग-अलग विभागों यानी भौतिकी, रसायन विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान के संकाय सदस्य शामिल हैं: इसमें भौतिकी विभाग से डॉ पवन हीरा, डॉ विकास आनंद, डॉ सुरिंदर पॉल, डॉ नूरजहां, डॉ गौरीशंकर साहू और पर्यावरण विज्ञान से डा. दिलबाग राणा, डॉ नीरज गुप्ता- रसायन विज्ञान विभाग से शामिल हैं। यह परियोजना तीन प्रमुख फोकस क्षेत्रों में अनुसंधान करने के

लिए दोनों संस्थानों के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देगी। इसमें इलेक्ट्रॉनिक सामग्री और उपकरण, इंजीनियरिंग से संबंधी उपकरण और ऊर्जा उत्पादन और भंडारण के लिए सामग्री शामिल है। इस मौके पर कुलपति ने कहा कि यह महत्वपूर्ण उपलब्धि सीयूएचपी के लिए एक गर्व का क्षण है और हमारे अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र की बढ़ती ताकत को दर्शाता है। यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक क्षेत्रों में अंतःविषय सहयोग और नवाचार के लिए नए रास्ते भी खोलता है।

इस परियोजना के तहत स्थापित की जा रही अत्याधुनिक इंस्ट्रूमेंटेशन सुविधा सीयूएचपी की अनुसंधान क्षमताओं को काफी बढ़ावा देगी। यह शोधकर्ताओं को सामग्रियों के सटीक लक्षण वर्णन करने, उनके प्रयोगात्मक कार्य में तेजी लाने और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्रों को प्रकाशित करने में सक्षम करेगा। इसके अलावा, यह पहल राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत शैक्षणिक सहयोगों को बढ़ावा देगी।

यह परियोजना सीयूएचपी के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक बड़ी छलांग को आगे बढ़ाती है और उत्कृष्टता, नवाचार और वैश्विक वैज्ञानिक जुड़ाव के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस मौके पर कुलपति के साथ कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार मौजूद रहे

सीयू में इंडियाना विश्वविद्यालय, पेंसिल्वेनिया के साथ संयुक्त एमबीए डिग्री कार्यक्रम जुलाई, 2025 से शुरू

धर्मशाला। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल की अध्यक्षता में कार्यकारी परिषद की 80वीं बैठक अनेक ऐतिहासिक निर्णयों के साथ संपन्न हुई। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश की 80वीं कार्यकारी परिषद की बैठक में तमाम सदस्य एवं अधिकारी उपस्थित रहे। इस बैठक में अमरीका के इंडियाना विश्वविद्यालय, पेंसिल्वेनिया के साथ संयुक्त एमबीए डिग्री कार्यक्रम जुलाई 2025 सत्र से आरंभ करने को मंजूरी दी गई। यह कार्यक्रम दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शैक्षिक सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करेगा और छात्रों को नए अवसर प्रदान करेगा। साथ ही कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल

ने केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश और इंडियाना विश्वविद्यालय पेंसिल्वेनिया के साथ शुरू किए जा रहे संयुक्त एमबीए कार्यक्रम के ब्राउचर (पोस्टर) का विमोचन भी किया। इस मौके पर केंद्रीय विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी केंद्र

के निदेशक प्रो. विशाल सूद, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा तथा विश्वविद्यालय के अन्य शिक्षक, कार्यकारी परिषद के सदस्य और अधिकारी उपस्थित रहे। गौरतलब रहे कि इस जॉइंट डिग्री कार्यक्रम के तहत छात्र दोनों विश्वविद्यालयों से जॉइंट एमबीए की डिग्री प्राप्त करेंगे, जिसमें भारतीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक परिदृश्य पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यह कार्यक्रम छात्रों को वैश्विक व्यापारिक वातावरण में प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद करेगा और उन्हें अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक परिदृश्य में अवसरों का लाभ उठाने में सक्षम बनाएगा। उच्च गुणवत्ता के लिए वचनबद्ध दोनों विश्वविद्यालयों का यह संयुक्त कार्यक्रम छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में मदद करेगा और उन्हें व्यापारिक जगत में सफलता प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। इस बाबत कुलपति प्रो सत प्रकाश बंसल ने कहा कि अब ऐसे विद्यार्थी जो संयुक्त



एमबीए डिग्री प्राप्त करने के इच्छुक हैं वे इस कार्यक्रम के शुरू होने से लाभ उठा सकते हैं। इस प्रयास से वैश्विक स्तर पर विद्यार्थी नए आयाम स्थापित कर पाएंगे जिसका सूत्रधार बनने हेतु केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक सदस्य को आज गर्व का अनुभव हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम छात्रों को उच्च गुणवत्ता और रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने में मदद करेगा और उनके भविष्य को भी स्वर्णिम बनाएगा। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर ऐसे विद्यार्थियों की मांग है जो संयुक्त डिग्री प्राप्त कर के वैश्विक जगत की समझ में निपुण होते हों। अतः यह वैश्विक संयुक्त एमबीए डिग्री विद्यार्थियों को नए कीर्तिमान स्थापित करने में भी लाभदायक सिद्ध होगी। कुलपति ने कहा कि यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की

प्रगति में भी सहायक सिद्ध होगा। इस प्रकार के वैश्विक डिग्री कार्यक्रम उपलब्ध करवाने में भी इस विश्वविद्यालय ने प्रदेश में आज पुनः बाजी मार ली है। केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी केंद्र के निदेशक प्रो. विशाल सूद ने कार्यक्रम में कहा कि यह विश्वविद्यालय की प्रगति को नई गति देगा तथा साथ ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य विश्वविद्यालयों के साथ भी भविष्य में इस प्रकार के विभिन्न

कार्यक्रमों को शुरू करने में निर्णायक भूमिका भी अदा करेगा। इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों की वैश्विक अवसरों तक पहुंच को और अधिक गति मिलेगी जिससे छात्र विश्वविद्यालय के नाम को भी आगे ले जायेंगे।

निदेशक प्रो. विशाल सूद ने विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद को इस ऐतिहासिक निर्णय हेतु आभार व्यक्त किया। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता अकादमिक, प्रो प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करेगा और छात्रों को उच्च एमबीए करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करेगा। कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम, छात्रों को दो विश्वविद्यालयों की संयुक्त एमबीए डिग्री प्रदान करेगा।

यह संयुक्त कार्यक्रम केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश और इंडियाना विश्वविद्यालय पेंसिल्वेनिया दोनों के मध्य सौहार्दपूर्ण शैक्षणिक वातावरण को मजबूती देगा।

शोधकर्ताओं को बताया वैज्ञानिक अनुसंधान का महत्व केंद्रीय विवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन



धर्मशाला। राष्ट्रीय कार्यशाला “तकनीकी अनुसंधान पद्धति एवं अनुसंधान में उन्नत सांख्यिकी (टारमासर 2025)” का आयोजन 6 से 7 मई 2025 के मध्य हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में किया गया। यह कार्यशाला सेंटर फॉर कम्प्यूटेशनल बायोलॉजी एंड बायोइन्फॉर्मेटिक्स द्वारा हिमालयन लाइफ साइंस सोसाइटी के सहयोग से आयोजित की गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रतिभागियों विशेषकर विद्यार्थियों एवं प्रारंभिक स्तर के शोधकर्ताओं को वैज्ञानिक अनुसंधान एवं आंकड़ा-आधारित अनुसंधान के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल प्रदान करना रहा। इस कार्यशाला के माध्यम से छात्रों को प्रयोगात्मक डिज़ाइन, डेटा संग्रहण, तथा सांख्यिकीय विश्लेषण में उन्नत उपकरणों के प्रयोग का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। व्याख्यानों एवं सजीव प्रदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों ने बायोस्टैटिस्टिकल मॉडल, डेटा विजुअलाइज़ेशन तकनीकें, एवं समसामयिक अनुसंधान समस्याओं से संबंधित बायोइन्फॉर्मेटिक्स वर्कफ़्लो के प्रयोग को सीखा। ड्रग डिस्कवरी, आणविक जीवविज्ञान, मेटाजीनोमिक्स एवं न्यूट्रास्यूटिकल संरचना पर आधारित सत्रों ने छात्रों को अंतर्विषयक शोध पद्धतियों से अवगत कराया, जबकि अनुसंधान नैतिकता एवं डेटा प्रबंधन पर हुई चर्चाओं ने उत्तरदायी अनुसंधान आचरण की समझ को गहराया।

प्रो. पी.आर. सुधाकरन, डॉ. ए. जयकुमारन नायर तथा डॉ. चांदनी सिद्धू जैसे प्रख्यात वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें प्रयोगशाला प्रोटोकॉल, उच्च-प्रवाह डेटा विश्लेषण, तथा वैज्ञानिक संप्रेषण जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस अनुभव ने प्रतिभागियों में तकनीकी दक्षता, आलोचनात्मक सोच, एवं सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया—जिससे वे कठोर अकादमिक एवं उद्योग आधारित अनुसंधान के लिए तैयार हो सकें।

सफल अनुसंधान के लिए “लैब टू फील्ड” काम करें शोधार्थी

सीयू में राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर कुलपति प्रो. बंसल ने किया आह्वान



धर्मशाला। "नवाचार के लिए युवा मस्तिष्कों का पोषण – 2025 (एनवाईएमएसआई-2025)" विषय पर केंद्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शाहपुर परिसर में हुआ। स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़ द्वारा एवं हिमालयन लाइफ साइंस सोसाइटी (एचएलएसएस) के सहयोग से आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से प्रमुख वैज्ञानिक, शिक्षाविद एवं शोधार्थी शामिल हुए।

समारोह की शुरुआत परंपरागत स्वागत, दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई। अतिथियों सीयूएचपी के कुलपति, प्रो. सत प्रकाश बंसल, चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के माननीय कुलपति, प्रो. नवीन कुमार, सम्मेलन के संयोजक एवं सीयूएचपी के स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़ के डीन, प्रो. सुनील कुमार, सीयूएचपी के डीन (अकादमिक), प्रो. प्रदीप कुमार, परिसर निदेशक प्रो. बी. सी. चौहान का स्वागत और सम्मान किया गया। सम्मेलन के संयोजक एवं सीयूएचपी के स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़ के डीन, प्रो. सुनील कुमार ने स्वागत भाषण देते हुए सम्मेलन के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डाला व सबका सम्मेलन में प्रस्तुत होने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने हिमालयन लाइफ साइंस सोसाइटी के बारे में जानकारी देते हुए इसकी महत्ता की जानकारी दी। सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं सीयूएचपी के कुलपति, प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन किया और सभी अतिथियों का स्वागत किया व सम्मलेन की सराहना करते हुए आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने अपने प्रेरणादायक संबोधन में छात्रों और शोधकर्ताओं को

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की शक्ति का उपयोग करने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय में बहुविषयक दृष्टिकोण व नवाचार वृद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने “लैब टू फील्ड” पर ज़ोर डालते हुए शोधार्थियों को सफल अनुसंधान के लिए प्रेरित किया।

इसके पश्चात मुख्य अतिथियों द्वारा 'एबस्ट्रैक्ट बुक' का विधिवत उद्घाटन किया गया, जो इस कार्यक्रम की शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रतीक है। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के माननीय कुलपति, प्रो. नवीन कुमार ने अपने संबोधन में 'विकसित भारत' की बात करते हुए विशेष रूप से युवा मस्तिष्कों और भावी नेतृत्वकर्ता छात्रों की भूमिका को संबोधित करते हुए उन्हें अपने जीवन का एक स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा दी। विशिष्ट अतिथि ने छात्रों से आग्रह किया कि वे रणनीतिक कार्य योजना तैयार करें और दृढ़ परिश्रम के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने यह भी कहा कि जीवन में केवल एक ही योजना पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि “प्लान बी” भी सदैव तैयार रखना चाहिए, जिससे असफलता की स्थिति में निराशा के बजाय सकारात्मक विकल्प पर काम किया जा सके। अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि ने यह भी कहा कि बदलते समय में युवाओं के पास विभिन्न परिस्थितियों में समाधान खोजने की योग्यता होनी चाहिए, तभी वे समाज और राष्ट्र निर्माण में सशक्त योगदान दे सकते हैं। अंत में सम्मेलन के आयोजन सचिव, डॉ. राकेश ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों, सहभागियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त कर राष्ट्रगान के साथ इस सत्र का समापन किया।

केंद्रीय विवि के कुलपति द्वारा दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की प्रोग्राम गाइड का विमोचन



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य सत प्रकाश बंसल जी ने आज हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के अंतर्गत प्रस्तावित पांच ऑनलाइन कार्यक्रमों की प्रोग्राम गाइड का विमोचन किया, कार्यक्रम के दौरान सीडीओई के निदेशक प्रो. विशाल सूद भी उपस्थित रहे।

इन प्रोग्राम गाइड में विश्वविद्यालय में चलने वाले प्रस्तावित ऑनलाइन कोर्स जिनमें ऑनलाइन कोर्स एम.ए. इतिहास, एम. ए. राजनीतिक विज्ञान, एम. ए. अर्थशास्त्र, एमबीए और एमसीए इत्यादि विषयों से संबंधित संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है और साथ ही विद्यार्थी सीडीओई की वेबसाइट पर भी इन्हें प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रोग्राम गाइड के विमोचन के दौरान दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. विशाल सूद को माननीय कुलपति ने बधाई भी दी। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के सह निदेशक डॉ. चमन लाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ. जितेन्द्र गर्ग एवं प्रो. अंबरीश महाजन जी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

केंद्रीय विश्वविद्यालय के 135 से अधिक विद्यार्थियों ने जेआरएफ, नेट और पीएच.डी की परीक्षा पास की

छात्राओं की अपेक्षा इस बार छात्र रहे आगे, कुलपति प्रो. बंसल ने दी बधाई कहा-विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात, संकाय सदस्य बधाई के पात्र

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के 135 से अधिक विद्यार्थियों ने यूजीसी की ओर से जून 2025 ली गई जेआरएफ, नेट और पीएच.डी की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसमें सबसे अधिक राजनीति विज्ञान विभाग के 22 विद्यार्थियों ने, समाजशास्त्र विभाग के 15, वाणिज्य विभाग के 14, अंग्रेजी विभाग के 13 विद्यार्थियों ने सबसे अधिक संख्या में इस परीक्षा को उत्तीर्ण किया है। इस बार 50 से अधिक छात्राओं और 52 छात्रों ने बाजी मारी है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल जी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार सहित केंद्र के सभी संकाय सदस्यों ने छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। इस बार दृश्य कला विभाग से नितिन सोनी ने जेआरएफ, प्रगति गोस्वामी, रेखा कुमारी ने नेट, पर्यावरण विज्ञान विभाग से कंचन सुम्बेरिया और विशाल ने नेट, पर्यटन विभाग से मुक्तेश शर्मा ने जेआरएफ, शिवानी आर्य ने नेट, विशाल कौशल ने पीएचडी, अंग्रेजी विभाग से नृपिका शर्मा, वर्षा ठाकुर, हेमप्रभा, जितेंद्र ठाकुर, आयुष ठाकुर, शीतल देवी, श्रेया शर्मा, अभिषेक अत्री, नेहा कौशल, आश्लेषा स्नेहा राठौड़, स्पर्श देव मेहता, आरुषि ने नेट,

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग से मोहित ने जेआरएफ, शौर्य शर्मा, आमूल राठौड़, प्रियांशु लोहारिया, नैन्सी, मो. कैयूम शेख ने नेट, रीतिका कुमारी ने पीएचडी, पादप विज्ञान विभाग से विनीता



कौंडल, सचिन ठाकुर, विधि ने गेट, संस्कृत विभाग से शमिता जरयाल, विशाल गौतम ने नेट, सीबीबी केंद्र से कौसिक पॉल ने नेट, पार्थ, रुचिरा बिस्वास ने गेट, दीन दयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र से

सुभद्रा देवी, ललिता देवी ने जेआरएफ, पल्लवी ने नेट, समाजशास्त्र विभाग से पूजा देवी ने जेआरएफ, सुनील कुमार, शुभम कपूर, मंजीत सिंह, आशिमा कालिया, कोमल कुमारी, शिवम राज, निहारिका सिंह, साहिल महंत, अंजलि शर्मा, शंकरपु असविथ, श्रुति, वाटिका शर्मा, योगेन्द्र पाल, प्रिया ने नेट, नव मीडिया विभाग से मनीष यादव, प्रज्ञा तिवारी ने पीएचडी, योग अध्ययन केंद्र से पायल शर्मा, साहिल कुमार, अर्चना बिलियान, कमलेन्द्र प्रताप सिंह ने नेट, रसायनशास्त्र विभाग से प्रियंका ने जेआरएफ, नेहा रानी ने नेट, हिंदी विभाग से अखंड प्रताप सिंह, अभय ने नेट, वाणिज्य विभाग से अंशुल पंचकरण, तन्वी चंदेल, मोहित सिंह, गिरीश कुमार, शगुन सोनी, अंजू, ईशा ठाकुर, इशान ठाकुर ने नेट, समित कुमार, संजना शर्मा ने पीएचडी, रमेश सिंह बिष्ट, अभिषेक भारती, प्रिया देवी ने जेआरएफ, इतिहास विभाग से अनुज, सिबासिस दास ने पीएचडी, मानवी शर्मा ने नेट, राजनीति विज्ञान विभाग से ललिता, रोशनी, उत्कर्षिणी ने जेआरएफ, हेमांक, प्रियांशु, चेतन, राधाकृष्ण, शमीमा, लवली, रविंद्र, याकूब, रिया, अभि, श्रियांश, राजन ने नेट, छवि गौतम, तनीषा, आयुष, योगिता ने पीएचडी की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

आधुनिक विश्व में भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परम्परा पर शोधपत्रों की हुई प्रस्तुति

सीयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों के विजेता पुरस्कृत, कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने विजेताओं को बधाई दी



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पर्यटन, यात्रा प्रबंधन एवं हास्पिटैलिटी मैनेजमेंट स्कूल तथा इंडिया नॉलेज कंसोर्टियम (आई एन के), यूके के संयुक्त तत्वावधान में " आधुनिक विश्व में भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परंपराओं की समकालीन प्रासंगिकता" विषय पर एक दिवसीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान आयोजित विभिन्न सत्रों के विजेताओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। हर सत्र से एक-एक विद्यार्थी और एक-एक संकाय सदस्य को सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए सम्मानित किया गया। इसमें प्रथम सत्र "भारतीय ज्ञानमीमांसा: भारतीय विचार की आधारशिला का अनावरण" विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष प्रो. प्रशांत गौतम तथा मुख्य वक्ता डॉ. मोहित दहिया रहे। इस सत्र के संचालक प्रो. सुनील ठाकुर, प्रतिवेदक डॉ. चंद्रशेखर, समन्वयक डॉ. उदय भान सिंह एवं

सह-समन्वयक डॉ. चंद्रशेखर रहे। इस सत्र में सुश्री ऋषा शर्मा एवं डॉ. गौरीशंकर साहू को विजेता घोषित किया गया। वहीं दूसरा सत्र "भारतीय लोकाचार में दार्शनिक बहुलवाद" विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष प्रो. सुशील मिश्र एवं मुख्य वक्ता डॉ. अनिल कुमार रहे। इस सत्र के संचालक प्रो. संजीत ठाकुर, प्रतिवेदक डॉ. रीता देवी, समन्वयक डॉ. मनप्रीत अरोड़ा एवं सह-समन्वयक डॉ. रीता देवी रहीं। इस सत्र में अनिल कुमार डोगरा, प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, प्रो. सुमन शर्मा एवं डॉ. मनप्रीत अरोड़ा को विजेता घोषित किया गया।

वहीं तीसरा सत्र "डिजिटल धर्म: भारतीय ज्ञान के साथ प्रौद्योगिकी और रणनीतिक शक्ति की पुनर्कल्पना" विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष प्रो. विनय कपूर मेहरा, मुख्य वक्ता प्रो. सुनील काबिया रहे। इस सत्र की संचालक प्रो. सूर्य

रश्मि रावत, प्रतिवेदक डॉ. अदिति शर्मा, समन्वयक डॉ. अरुण भाटिया एवं सह-समन्वयक डॉ. अदिति शर्मा रहीं। इस सत्र में विकल्प चौहान, डॉ. अदिति शर्मा, डॉ. मनप्रीत अरोड़ा को विजेता घोषित किया गया। वहीं चौथा सत्र "वेदों से मूल्यों तक: स्थिरता विमर्श में भारतीय दर्शन" विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष प्रो. एच.के. सिंह, मुख्य वक्ता चंद्रकांत रहे। इस सत्र के संचालक प्रो. भाग चंद चौहान, प्रतिवेदक डॉ. सत्यानंद, समन्वयक डॉ. अमरीक सिंह तथा सह-समन्वयक डॉ. सत्यानंद थे। इस सत्र रंजन शर्मा, अभिषेक तथा प्रो. तनु जिंदल को विजेता घोषित किया गया। वहीं पाँचवाँ सत्र "पारंपरिक कला: भारतीय कला की जीवित परंपराएँ" विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्ष डॉ. जगन्नाथ, मुख्य वक्ता प्रो. दीपक राज

गुप्ता रहे। संचालक प्रो. विशाल सूद, प्रतिवेदक डॉ. रुचि शर्मा, समन्वयक डॉ. अलका लल्लू तथा सह-समन्वयक डॉ. रुचि शर्मा रहीं। इस सत्र में जान्हवी ठाकुर एवं सुरुचि कटला को विजेता घोषित किया गया। इस मौके पर मुख्य संरक्षक हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक संकटों का स्थायी समाधान प्रस्तुत करती है। इस सम्मेलन में हुए पांचों सत्रों को लेकर जो लेख आए हैं। इसको लेकर एक किताब पब्लिश की जाएगी, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुठा चित्रण देश के लिए होगा। पर्यटन, यात्रा प्रबंधन एवं हास्पिटैलिटी मैनेजमेंट स्कूल के अधिष्ठाता प्रो. सुमन शर्मा ने विजेताओं को बधाई दी।

प्रो. नरेन्द्र कुमार सांख्यान केंद्रीय विवि के नए कुलसचिव

कार्यभार संभालने के बाद बोले- विश्वविद्यालय परिवार के सहयोग से बढ़ेंगे आगे
कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल सहित विश्वविद्यालय के गणमान्यों ने दी बधाई



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में प्रो. नरेन्द्र कुमार सांख्यान ने बतौर स्थायी कुलसचिव का कार्यभार संभाल लिया है। इससे पहले वे चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर में मुद्रा विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। उनका 28 वर्षों से अधिक का विशिष्ट शैक्षणिक और प्रशासनिक करियर रहा है। उन्होंने 10 वर्षों से अधिक समय तक प्रोफेसर (स्तर 14) के रूप में कार्य किया है, इससे पहले उन्होंने वरिष्ठ वैज्ञानिक (एजीपी 9000 और 8000) और सहायक वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान और नियमित) के रूप में 9 वर्षों की संयुक्त अवधि के साथ-साथ 2 वर्षों तक रिसर्च एसोसिएट और वरिष्ठ रिसर्च फेलो के रूप में कार्य किया है। उनके नेतृत्व योगदान को आधिकारिक प्रदर्शन मूल्यांकन में लगातार उत्कृष्ट दर्जा दिया गया है और यह संस्थागत प्रशासन, अनुसंधान उन्नति और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्रो. सांख्यान मूलतः जिला बिलासपुर के रहने वाले हैं।

कार्यभार संभालने के बाद उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने हाल ही के कुछ वर्षों में जिस तरह की उपलब्धियां हासिल की हैं, वे प्रशंसनीय



हैं। इसके लिए कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल और विश्वविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है। सबसे पहले प्राथमिकता यही रहेगी कि किस तरह से विश्वविद्यालय की प्रगति को आगे बढ़ाया जाए। स्थायी परिसर के निर्माण कार्य से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने तक सभी में सहयोग रहेगा। विश्वविद्यालय विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में शामिल हो इसके लिए कदम उठाए जाएंगे। विद्यार्थियों की समस्याओं को सुलझाया जाएगा। हर संभव प्रयास रहेगा। सबसे सहयोग से सफलता को हासिल किया जाएगा। स्थायी परिसर प्राथमिकता में रहेगा। एक साथ रहेंगे तो विद्यार्थियों को भी सुविधा मिलेगी और विश्वविद्यालय को भी एक नए मुकाम तक पहुंचाया जा सकेगा। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय में बहुत सराहनीय कार्य हो रहे हैं। वहीं इस मौके पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कुलसचिव प्रो. नरेन्द्र कुमार सांख्यान को कार्यभार संभालने पर बधाई दी और कहा कि विश्वविद्यालय नित नई ऊंचाइयों को छूए इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय एक शोध विश्वविद्यालय के तौर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है।

राम द्वारा दुर्गा आराधना से शुरू हुई बंगाल की दुर्गा पूजा परंपरा



भारत में ऐसा व्यक्ति ढूँढना मुश्किल है जिसने बंगाल की दुर्गापूजा का नाम न सुना हो। चूंकि पूरे भारत में दीपावली का प्रचलन बहुत अधिक है, इसलिए दीपावली की पृष्ठभूमि की कहानी सबको पता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि बंगाल की दुर्गा पूजा के पीछे की कहानी क्या है? आइए जानते हैं, वह कहानी क्या है? और इस दुर्गापूजा की शुरुआत किसने की थी? पहले वसंत के समय, बसंती पूजा के माध्यम से दुर्गा माता की पूजा की जाती थी। लेकिन रावण के साथ युद्ध से पहले राम दुर्गा माता की आराधना करते थे। यह पूजा उन्होंने आश्विन मास में की थी और तभी से बंगाल में दुर्गापूजा की अकालबोधन प्रचलित हुई। प्रचलित कहानी के अनुसार, एक समय ब्रह्मा से वर

पाने के बाद महिषासुर नामक एक असुर अत्यंत शक्तिशाली हो गया। ब्रह्मा ने उसे वर दिया था कि कोई भी पुरुष उसे मार नहीं सकता, केवल महिला ही उसका वध कर सकती है। वर पाने के बाद महिषासुर ने स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में, मनुष्यों से लेकर देवताओं तक अत्याचार शुरू कर दिया। उस समय उन्हें मुक्त करने के लिए, ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने मिलकर दस हाथों वाली दुर्गा माता का निर्माण किया और सभी देवताओं ने मिलकर उनके सभी हाथों को अस्त्रों से भर दिया। फिर माता दुर्गा ने महिषासुर के साथ युद्ध किया और उसका वध किया। और तभी से दुर्गा माता का दूसरा नाम "महिषासुरमर्दिनी" है।

सौमिक चटर्जी
एम ए न्यू मीडिया
प्रथम वर्ष

शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाकर ही पूरा होगा विकसित भारत का सपना – प्रो. बंसल

सीयू और इंक के संयुक्त तत्ववाधान में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय तथा इंडिया नॉलेज कंसोर्टियम (आई एन के), यूके के संयुक्त तत्ववाधान में "आधुनिक विश्व में भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परंपराओं की समकालीन प्रासंगिकता" विषय पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन राजकीय कालेज के सभागार में हुआ। इस संगोष्ठी में 300 से अधिक विद्वानों और छात्रों ने भाग लिया। इस मौके पर कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा ने इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की रूपरेखा को सभी के समक्ष रखा। इस मौके पर मुख्य संरक्षक हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक संकटों का स्थायी समाधान प्रस्तुत करती है। उन्होंने चार मूलभूत स्तंभों - शांति स्थापना, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक नेतृत्व और शैक्षिक क्रांति-एनईपी 2020 पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन में हुए पांचों सत्रों को लेकर जो लेख आए हैं, उनको लेकर एक किताब प्रकाशित की जाएगी। भारतीय ज्ञान परंपरा का अनूठा चित्रण देश के लिए होगा। उन्होंने कहा कि हमने यह देखा भी जिस तरह से यूएसए, यूके और कई विकसित देश भारतवर्ष के ज्ञान की तरफ देख रहे हैं और ज्ञान परंपरा के द्वारा पूरे विश्व को हमने सिद्ध भी कर दिया है कि भारत हर रूप में

अग्रणी है, चाहे एजुकेशन सेक्टर लें, हेल्थ सेक्टर लें या एनर्जी सेक्टर लें। इस मौके पर प्रो. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली बतौर मुख्य अतिथि, मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, संरक्षक प्रो. सुनील, अध्यक्ष इंडिया



नॉलेज कंसोर्टियम, विशेष अतिथि में प्रो. दिनेश कुमार, कुलपति विश्ववर्क स्किल विवि हरियाणा, प्रो. मनोज दीक्षित, कुलपति महाराजा गंगासिंह विवि बीकानेर, प्रो. रजनीश अरोड़ा, पूर्व कुलपति पंजाब टेक्निकल यूनिवर्सिटी जालंधर, प्रो. राज नेहरू ओएसडी मुख्यमंत्री हरियाणा मौजूद रहे।

इस दौरान मौजूद गणमान्यों ने सत्य शोधक पत्रिका, राही, अनुचिंतन, धौलाधार संदेश और क्रोनिकल मैनेजमेंट का लोकार्पण किया। वहीं चांसलर पद्मश्री प्रो. हरमोहिंदर सिंह बेदी ने कहा कि प्रो. बंसल का यह विजन भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। हमारा कर्तव्य है कि इस ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाएँ।

वहीं अन्य गणमान्यों ने भी शिक्षा प्रणाली में भारतीय परंपरा को अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इसी के माध्यम से हम 2047 में विकसित भारत का सपना पूरा कर सकेंगे। संगोष्ठी का समापन प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

संगोष्ठी में प्रथम सत्र इंडिक एपिस्टेमोलोजी: अनवीलिंग द फाउंडेशन ऑफ इंडियन थॉट पर, दूसरा सत्र फिलोसोफिकल पलुरलिज्म इन भारतीय इथोज़ पर, तीसरा सत्र डिजिटल धर्मा: रीडमेजनिंग द टेक्नोलोजी एवं स्ट्रैटेजिक पावर विद इंडिक विज़डम पर, चौथा सत्र वेदाज्ञ द वैल्यूज: इंडियन फिलोसोफीज इन सस्टेनेबल डिस्कॉर्स पर और पांचवा सत्र द लिविंग ट्रेडीशन्स ऑफ भारतीय आर्ट पर हुआ।

एआईयू के ऐतिहासिक 99वें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के ऐतिहासिक 99वें वार्षिक सम्मेलन एवं राष्ट्र की सेवा में एआईयू के 100 वर्षों के ऐतिहासिक योगदान के उपलक्ष्य में आयोजित भव्य समारोह में उपस्थित रहे।

“भविष्य की उच्च शिक्षा की परिकल्पना: भारत की महत्वपूर्ण भूमिका” विषय पर इस समारोह का आयोजन नोएडा के एमिटी विश्वविद्यालय में भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) द्वारा आयोजित कुलपतियों की 99वीं वार्षिक बैठक और राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी ने किया। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम एआईयू की राष्ट्र के प्रति 100 वर्षों की सेवा का उत्सव था, जिसमें चार सौ से अधिक कुलपति भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के भविष्य को आकार देने के लिए एक साथ मंच पर आए।

इस मौके पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि शैक्षणिक उत्कृष्टता, दूरदृष्टि और नेतृत्व का यह एक एक गौरवपूर्ण अवसर रहा। हमारा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने में देश का अग्रणी संस्थान रहा है। अगर हमें A+ ग्रेड प्राप्त हुआ है, तो उसका श्रेय राष्ट्रीय शिक्षा नीति को

समर्पणपूर्वक लागू करने के प्रयासों को जाता है। वर्तमान सरकार द्वारा जारी की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक प्रगतिशील और भविष्योन्मुखी दस्तावेज़ है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, समग्र और बहुविषयक प्रकृति का बनाना है। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरे देश में लागू करने का प्रयास करते समय यह भी ध्यान रखना होगा कि शिक्षा की गुणवत्ता पर खंडित रूप में विचार न किया जाए, बल्कि अधिक समग्र और साथ ही अधिक विस्तारित रूप में विचार किया जाए। युवाओं के अंदर स्व का भाव जागरित करना बहुत जरूरी है। जब युवा के अंदर स्व का भाव जागृत होगा, प्रवृत्त होगा, प्रतिष्ठित होगा, और श्रेष्ठता के उस उच्च स्तर तक जाने के लिए उस स्व का बोध होना उस युवाशक्ति में जरूरी होगा और जिसे शिक्षा के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

इस मौके पर उन्होंने शिक्षा की भूमिका को मानवता की दृष्टि से समझाते हुए कहा कि हमारा प्रयास बेस्ट माइंड्स तैयार करना है जो आत्मनिर्भर और एकात्म मानवतावाद से प्रेरित हों। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) ने एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (आईआईआरएफ) 2025 द्वारा जारी नवीनतम रैंकिंग में विश्वविद्यालय को देश के सभी सरकारी विश्वविद्यालयों में आठवां स्थान प्राप्त हुआ है।

कुलपति प्रो. एस.पी. बंसल से न्यूजीलैंड के डिप्टी हाई कमिश्नर ने की मुलाकात

धर्मशाला। न्यूजीलैंड के डिप्टी हाई कमिश्नर श्री मैथ्यू हेयर्स ने केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के राजनीति विज्ञान विभाग का दौरा किया। उनके इस दौरे का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के प्रमुख राजनीतिक हितधारकों की गहरी समझ प्राप्त करना और न्यूजीलैंड व भारत के बीच भविष्य में सहयोग के संभावित रास्तों की खोज करना रहा।



अपने दौरे के दौरान, श्री हेयर्स ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल से भेंट की। दोनों गणमान्य व्यक्तियों के बीच केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश और न्यूजीलैंड के शैक्षणिक संस्थानों के बीच अकादमिक और शोध सहयोग की संभावनाओं पर सार्थक संवाद हुआ। श्री हेयर्स ने प्रो. सत प्रकाश बंसल को संभावित साझेदारियों पर आगे चर्चा के लिए न्यूजीलैंड उच्चायोग आने का औपचारिक निमंत्रण भी दिया।

विश्वविद्यालय की प्रगति हेतु युवाओं से एकजुट होने का आह्वान केंद्रीय विवि में अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर कार्यक्रम

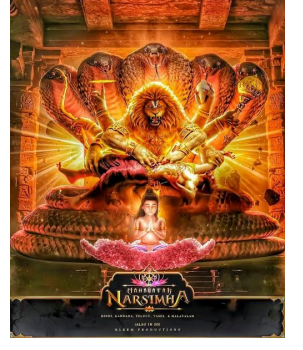


धर्मशाला। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, चिकित्सा अधिकारी, जिला स्वास्थ्य अधिकारी और केसीसी बैंक के संयुक्त तत्वावधान में सेमिनार हॉल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, कुलसचिव डॉ. नरेंद्र सांख्यान, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मलकीयत सिंह रहे। इस कार्यक्रम के सह संयोजक अनुराग शर्मा चिकित्सा अधिकारी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। यह कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित हुआ जिसके अंतर्गत पहले सत्र में जिला स्वास्थ्य अधिकारी राजेश सूद ने विद्यार्थियों को टीबी के कार्यक्रम और टीबी उन्मूलन के कार्यक्रमों से अवगत करवाया।

दूसरे सत्र में केसीसी बैंक के अधिकारियों में शरत रेल्हन, मनोज बालोटिया, सुमित मनकोटिया द्वारा सहकारी समितियों का भारत में योगदान और विश्व में कोऑपरेटिव सोसाइटी की दशा और दिशा के ऊपर विस्तार से चर्चा की तथा कोऑपरेटिव सोसाइटी को आत्मनिर्भर भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की

कड़ी बताया। समापन भाषण में कुलसचिव डॉ. नरेंद्र सांख्यान ने विद्यार्थियों को एक जुट होकर विश्वविद्यालय के विकास हेतु कार्य करने का आह्वान किया। अध्यक्षीय भाषण में प्रो. प्रदीप कुमार ने विद्यार्थियों को ऑपरेटिव सोसाइटी की उपयोगिता से अवगत करवाया और उद्यमिता के लिए प्रेरित किया। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. सुनील ठाकुर ने ज्ञापित किया। तीसरे सत्र में हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक के अगुवाई में एक सभा और रैली का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. मलकीयत सिंह ने अपने संबोधन में माननीय कुलपति की पंक्तियों को उद्धृत किया जिनके अनुसार, 1947 में सभी युवाओं का लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्ति था। वहीं वर्ष 2047 में सभी युवाओं का लक्ष्य विकसित भारत की संकल्पना होना चाहिए। समन्वयक ने बताया कि माय भारत पोर्टल के अंतर्गत आने वाले दिनों में युवाओं को जागरूक करने हेतु ऐसे कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर हिंदी विभाग, अंग्रेजी विभाग, संस्कृत विभाग, अंबेडकर उत्कृष्ट केंद्र, एमबीए के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

फिल्म समीक्षा



मैंने हाल ही में महावतार नरसिंह फिल्म देखी, और सच कहूँ तो ऐसा लगा जैसे मेरे बचपन की कोई कहानी परदे पर ज़िंदा हो उठी हो। यह कथा मैंने बचपन में अपनी दादी से कई बार सुनी थी, इसलिए यह फिल्म मुझे उन सुनहरे बचपन की यादों में ले गई। यह अनुभव बहुत ही भावनात्मक और दिल के क़रीब लगा।

सबसे ज़्यादा हैरानी इस बात की हुई कि भले ही यह फिल्म 3डी एनीमेशन में बनी है जो अभी भी भारतीय दर्शकों के लिए बहुत नया है फिर भी यह इतनी बड़ी हिट बन गई। एनीमेशन बेहद सुंदर था और कहानी कहने का तरीका बिल्कुल जीवंत लगा। हर दृश्य में भावनाएँ और आस्था झलक रही थीं, खासकर वह क्षण जब नरसिंह प्रह्लाद की रक्षा करने प्रकट होते हैं। मेरा सबसे पसंदीदा हिस्सा वह था जब प्रह्लाद को पहाड़ (या शायद किसी टीले) से नीचे धकेल दिया जाता है, और विष्णु बादल के रूप में प्रकट होकर उसे संभाल लेते हैं।

कुल मिलाकर महावतार नरसिंह मेरे लिए सिर्फ़ एक फिल्म नहीं थी यह मेरे बचपन की उन कहानियों को फिर से जीने जैसा अनुभव था, जिन्होंने मुझे आस्था और दया का अर्थ सिखाया।

सीख: इस फिल्म से हम यह सीख सकते हैं कि सच्ची आस्था कभी व्यर्थ नहीं जाती, जब हम सच्चे मन से ईश्वर पर विश्वास रखते हैं, तो वे हर संकट में हमारी रक्षा करते हैं।

हिया हज़ारिका
एम ए न्यू मीडिया
द्वितीय वर्ष

एफडीपी ई एंड आईसीटी अकादमी, आईआईटी गुवाहाटी के सहयोग से हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी), धर्मशाला में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग पर संकाय विकास कार्यक्रम शुरू हुआ



धर्मशाला। शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी), धर्मशाला ने इलेक्ट्रॉनिक्स और आईसीटी अकादमी, आईआईटी गुवाहाटी के सहयोग से आज “कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग” पर पांच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का उद्घाटन किया। 2 से 6 जून 2025 तक निर्धारित, इस उन्नत प्रशिक्षण पहल का उद्देश्य एआई और एमएल के तेजी से विकसित हो रहे डोमेन में अत्याधुनिक ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं के साथ संकाय सदस्यों और शोध विद्वानों को सशक्त बनाना है। एफडीपी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रोफेसर सुमन शर्मा ने शिरकत की। इस अवसर पर सीयूएचपी के शिक्षा विभाग के प्रमुख प्रोफेसर विशाल सूद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनुपमा नम्बू और एफडीपी समन्वयक डॉ. ललित मोहन शर्मा सहित कई प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में, प्रो. सुमन शर्मा ने उद्योगों,

अनुसंधान के तरीकों और शिक्षाशास्त्र को नया रूप देने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने इस पहल की समय पर और प्रासंगिक अकादमिक हस्तक्षेप के रूप में सराहना की, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के उद्देश्यों के साथ संरेखित है, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी एकीकरण को बढ़ावा देने और बहु-विषयक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने में। कार्यक्रम के लिए कुल 105 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया है, जो संकाय सदस्यों, शोध विद्वानों और शिक्षाविदों सहित एक विविध शैक्षणिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं यह व्यापक प्रतिनिधित्व शिक्षा और अनुसंधान में एआई और एमएल की परिवर्तनकारी क्षमताओं को समझने में अकादमिक रुचि और तात्कालिकता को रेखांकित करता है। एफडीपी का प्राथमिक उद्देश्य व्यावहारिक सत्रों और केस स्टडीज़ के साथ पूरक एआई और एमएल अवधारणाओं, एल्गोरिदम और अनुप्रयोगों की आधारभूत से

मध्यवर्ती स्तर की समझ प्रदान करना है। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को ऐसे उपकरण और रूपरेखाएँ प्रदान करके अंतःविषय सहयोग, कौशल विकास और अनुसंधान नवाचार को प्रोत्साहित करना है जो आधुनिक शैक्षणिक और उद्योग संदर्भों में तेजी से प्रासंगिक हैं। सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम में विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक सत्र और आईआईटी गुवाहाटी और अन्य प्रमुख संस्थानों के प्रतिष्ठित संसाधन व्यक्तियों के नेतृत्व में इंटरैक्टिव चर्चाएँ शामिल हैं। कवर किए जाने वाले विषयों में पर्यवेक्षित और अपर्यवेक्षित शिक्षण, तंत्रिका नेटवर्क, गहन शिक्षण, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और एआई नैतिकता शामिल हैं। सत्र उच्च शिक्षा में एआई के शैक्षणिक अनुप्रयोगों पर भी चर्चा की गई, जिसमें यह पता लगाया गया कि व्यक्तिगत शिक्षण, पाठ्यक्रम विकास और शैक्षणिक प्रशासन के लिए बुद्धिमान प्रणालियों का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जा सकता है। कार्यक्रम

समन्वयक डॉ. ललित मोहन शर्मा ने एफडीपी के कार्यक्रम और सीखने के परिणामों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने उच्च शिक्षा में क्षमता निर्माण और तकनीकी एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा विभाग, सीयूएचपी की प्रतिबद्धता को दोहराया। प्रो. विशाल सूद ने जोर देकर कहा कि यह एफडीपी चौथी औद्योगिक क्रांति की चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए तैयार डिजिटल रूप से सक्षम शिक्षकों और शोधकर्ताओं को तैयार करने की दिशा में एक कदम आगे है। यह पहल रणनीतिक सहयोग और अत्याधुनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अकादमिक उत्कृष्टता के सीयूएचपी के दृष्टिकोण का प्रमाण है। ईएंडआईसीटी अकादमी, आईआईटी गुवाहाटी के साथ साझेदारी भी उभरती प्रौद्योगिकियों में गुणवत्ता वृद्धि, नवाचार और राष्ट्रीय क्षमता निर्माण के लिए साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है। संकाय विकास कार्यक्रम से प्रतिभागियों की अकादमिक और शोध प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान मिलने की उम्मीद है, जिससे उन्हें अपने संबंधित विषयों और पेशेवर प्रथाओं में एआई और एमएल को एकीकृत करने के कौशल से लैस किया जा सके।



एक व्यक्ति आगे दस लोगों को योग सीखाने का ले संकल्प- प्रो. बंसल

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विवि परिवार और स्कूली बच्चों ने लिया भाग



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन धौलाधार हाइट्स रिसार्ट, कुनाल पथरी के हाल में करवाया गया। इसमें विश्वविद्यालय परिवार के साथ-साथ शहर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों भाग लिया और योग किया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन में 500 से ऊपर प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन 6 : 00 से 7:30 बजे प्रातः किया गया जिसमें सभी प्रतिभागियों ने योग प्रोटोकॉल का अभ्यास किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने शिरकत की। अपने संबोधन में कुलपति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने कहा कि विश्वविद्यालय स्थित योग अध्ययन केंद्र द्वारा पिछले एक महीने भर से पूरे धर्मशाला क्षेत्र के स्कूली बच्चों, बुजुर्गों व आम जनमानस को योग से अपने शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के प्रति जागरूक करवाया गया। उन्होंने इस मौके पर हर एक से दस व्यक्तियों को योग सीखाने का आह्वान किया। जिससे कि लोग योग

के बारे में जाने और स्वास्थ्य के लिए यह किस तरह से लाभदायक है, इसके बारे में जानें। इसके उपरांत सहायक आचार्यों, योग अध्ययन केंद्र के निर्देशन में प्रोटोकॉल अभ्यास करते हुए सूक्ष्म व्यायाम, विभिन्न आसनों व प्राणायाम तथा ध्यान की विधियों के साथ-साथ उनके लाभों को भी व्यक्त किया गया, तत्पश्चात शांति पाठ से इस अभ्यास का समापन हुआ। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर पूरा विश्वविद्यालय परिवार मौजूद रहा। इस कार्यक्रम में आसपास के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं ने भी अपनी भागीदारी दर्ज करवाई जिनमें मुख्य रूप से: भारतीय हिमालयन पब्लिक स्कूल, जदरंगल, दयानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, धर्मशाला, होली हॉक पब्लिक स्कूल, श्री सत्य साइन एजुकेशन विद्या प्रतिष्ठान, स्लेट गोदाम उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों की संख्या लगभग 600 के करीब रही। योग विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी। नशा मुक्ति को एक अहम जिम्मेदारी मानते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय इसके लिए वचनबद्ध है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय में “निर्मुक्त युद्ध कला (आत्मरक्षा)” प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला द्वारा आयोजित “निर्मुक्त युद्ध कला (आत्मरक्षा) प्रशिक्षण” कार्यक्रम का समापन समारोह धौलाधार परिसर-2 में



सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह प्रशिक्षण छात्राओं, महिला शिक्षकों, एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने हेतु स्पर्श शीर्ष समिति एवं महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र (सीडब्ल्यूएसडी) द्वारा हिमाचल प्रदेश सशस्त्र पुलिस एवं प्रशिक्षण, शिमला के सहयोग से आयोजित किया गया था।

केंद्रीय विश्वविद्यालय के तीनों परिसरों (धर्मशाला, शाहपुर, व देहरा) से प्रशिक्षण में भाग लेने वाली प्रतिभागियों ने आत्मरक्षा के माध्यम से सीखी कला का आज समापन समारोह में प्रभावशाली प्रदर्शन भी किया।

इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि हिमाचल पुलिस विभाग की इंस्पेक्टर डिम्पल, ने प्रतिभागियों की सराहना करते हुए विश्वविद्यालय की इस पहल को महिला सुरक्षा के लिए एक प्रेरणादायक कदम बताया और पुलिस विभाग की तरफ से आने वाले समय में भी इस प्रकार प्रेरणादायी कार्यक्रम करवाते रहने की बात कही।

केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति एवं इस कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक प्रो. एस. पी. बंसल ने कहा, “आत्मरक्षा का प्रशिक्षण महिलाओं को हर परिस्थिति में सशक्त और आत्मविश्वासी बनाता है। यह कोई विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है।” उन्होंने हिप्रकेवि की प्रदेश में अग्रणी भूमिका को रेखांकित करते हुए इसे “महिलाओं की स्वरक्षा प्रशिक्षण की पहल करने वाले संस्थानों में से एक” बताया और कहा कि “अब यह प्रशिक्षित छात्राओं की जिम्मेदारी है कि वे स्थानीय लड़कियों के लिए प्रशिक्षक बनें।”



उन्होंने सुझाव दिया कि विद्यालयों को गोद लेकर पुलिस के सहयोग से छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साथ ही, ‘वूमन सेफ्टी शील्ड’ और ‘माय सेफ पिन’ जैसे यूट्यूब चैनल्स बनाकर सुरक्षा संबंधित जागरूकता को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा, “भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महिलाओं की भूमिका अनिवार्य होगी और विश्वविद्यालय ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से उनके सशक्तिकरण में अहम योगदान देगा।”

स्पर्श शीर्ष समिति और सीडब्ल्यूएसडी की अध्यक्ष प्रोफेसर सूर्य रश्मि रावत ने स्वयं सहायता समूहों और आत्मरक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के महत्व पर प्रकाश डाला और इसे समग्र विकास के लिए एनईपी 2020 के दृष्टिकोण से जोड़ा।

इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार (डीन अकादमिक), प्रो. प्रदीप कुमार, प्रो. सुनील ठाकुर (अधिष्ठाता छात्र कल्याण), प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्रशिक्षक और बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

विद्यार्थियों ने जाना दैनिक दिनचर्या में योग का महत्व

केंद्रीय विश्वविद्यालय का योग विभाग शिक्षण संस्थानों में दे रहा प्रशिक्षण पुलिस लाइन में तीन दिन तक सत्तर अधिकारियों-कर्मचारियों ने सीखा योगा



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए हो रही पूर्व तैयारियों को लेकर बीते दिनों विभिन्न शिक्षण संस्थानों में योग शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों को प्रशिक्षित संकाय सदस्यों और शोधार्थियों की ओर से विभिन्न योग क्रियाओं के बारे में जानकारी दी जा रही है और जीवन में योग का क्या महत्व है इसके बारे में अवगत करवाया जा रहा है। इसी कड़ी में केंद्रीय विश्वविद्यालय के योग विभाग के संकाय सदस्य डा. विकास नड्डा और उनकी टीम विभिन्न शिक्षण संस्थानों में योग शिविर लगा रही है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के दिशानिर्देशानुसार यह शिविर लगाए जा रहे हैं।

टीम ने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन में बीते दिनों तीन दिवसीय योग प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर में सहायक आचार्य डॉ. विकास नड्डा के साथ शोधार्थियों अतुल, चंद्रज्योति, दीपिका, अंजू एवं योग स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों पोषण, अर्चना एवं काजल द्वारा प्रशिक्षुओं को विभिन्न योग आसानों

के बारे में जानकारी दी गई।

इसमें 80 प्रशिक्षुओं ने योग के सूक्ष्म व्यायाम, आसन, प्राणायाम, योग निद्रा और ध्यान की विधियों को सीखा। इसके साथ ही राजकीय महाविद्यालय, धर्मशाला में दो दिवसीय योग प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया गया। इस योग प्रशिक्षण शिविर में सहायक आचार्य डॉ. विकास नड्डा और पीजी डिप्लोमा के विद्यार्थियों सपना और रूपाली ने 150 प्रशिक्षुओं ने योग के सूक्ष्म व्यायाम सिखाए।

इसी तरह टीम द्वारा धर्मशाला के पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए त्रिदिवसीय योग प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन पुलिस लाइन में किया गया। जिसमें डॉ. विकास नड्डा सहित शोधार्थियों चन्द्रज्योति, प्रवीन व पोषणसाहू के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग प्रोटोकॉल का अभ्यास करवाया गया। पुलिस विभाग के 70 प्रशिक्षुओं ने योगिक सूक्ष्म व्यायाम, सूर्य नमस्कार, आसन एवं प्राणायाम सीखे। समापन अवसर पर कई पुलिस कर्मचारियों ने केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं योग अध्ययन केंद्र के इस पहल के लिए धन्यवाद भी किया।

चुनाव करवाए जाने की संभावनाओं चुनौतियों एवं प्रभावों पर रखे विचार

केंद्रीय विवि में “एक राष्ट्र, एक चुनाव” विषय पर संगोष्ठी आयोजित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) की ओर से “एक राष्ट्र, एक चुनाव” विषय पर एक विचारोत्तेजक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम धौलाधार परिसर-I के सेमिनार हॉल में आयोजित हुआ। संगोष्ठी का उद्देश्य भारत में एक साथ चुनाव कराए जाने की संभावनाओं, चुनौतियों एवं प्रभावों पर विमर्श करना रहा। इसमें प्रख्यात शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कुलपति, प्रो. सत प्रकाश बंसल रहे, जिन्होंने विषय की महत्ता पर विचार प्रकट किए। संगोष्ठी की अध्यक्षता एवं संयोजन का दायित्व विधायक जे.आर. कटवाल ने निभाया, जिन्होंने “एक राष्ट्र, एक चुनाव” विषय पर सारगर्भित मार्गदर्शन प्रदान किया। इस अवसर पर प्रो. शशिकांत शर्मा, विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला ने विशिष्ट वक्ता के रूप में विषय के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण संबोधन दिया। प्रो. प्रदीप कुमार, अधिष्ठाता अध्ययन ने स्वागत भाषण में लोकतंत्र को सशक्त बनाने हेतु चुनावी सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं जे.आर. कटवाल जी, सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी एवं विधायक, ने विषय की व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि एक साथ चुनाव से चुनावी खर्च में भारी कटौती होगी और चुनावी हिंसा में भी कमी आएगी। उन्होंने बार-बार लागू होने



वाले आचार संहिता (एमसीसी) के कारण नीति-निरंतरता और शासन में आने वाली रुकावटों की आलोचना की। प्रो. शशिकांत शर्मा ने ओएनओई के कानूनी और संवैधानिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया गया कि इस सुधार को लागू करने के लिए

संविधान में व्यापक संशोधन आवश्यक होंगे ताकि केंद्र और राज्य विधानसभाओं के कार्यकाल को समन्वित किया जा सके। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अपने उद्बोधन में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि वे जिम्मेदार

नागरिकों के निर्माण और लोकतांत्रिक चेतना के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने “रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म” के सिद्धांत को समर्थन दिया और “एक राष्ट्र, एक सदस्यता” जैसे व्यापक शासन उपायों से ओएनओई को जोड़ा। उन्होंने अपने वक्तव्य में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विचारों को प्रभावशाली ढंग से दोहराते हुए कहा कि “वन नेशन, वन इलेक्शन” केवल विमर्श का विषय नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की आवश्यकता है, जिसे धरातल पर उतारा जाना चाहिए।

उन्होंने मोदी जी के इस कथन

— “वन नेशन, वन इलेक्शन इज़ नॉट ए मैटर ऑफ़ डिबेट अलोन, इट इज़ द नीड ऑफ़ द नेशन। इट मस्ट बी डिलीवर्ड” —

को सारगर्भित रूप से प्रस्तुत करते हुए इस चुनावी सुधार की व्यवहारिकता पर बल दिया।

प्रो. सुमन शर्मा, कुलसचिव, सीयूएचपी ने सभी अतिथियों, वक्ताओं, आयोजकों और प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। यह कार्यक्रम प्रोफेसर सुर्या रश्मि रावत, अध्यक्ष, स्पर्श एपेक्स समिति, महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र तथा संगोष्ठी की नोडल अधिकारी, के मार्गदर्शन में एवं डॉ. रुचि शर्मा, एचपीकेवी बिजनेस स्कूल, सीयूएचपी के सहयोग से समन्वित किया

सीयू में डॉ अंबेडकर पर सर्टिफिकेट कोर्स होगा शुरू

अंबेडकर उत्कृष्ट केंद्र की ओर से प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर- एक में चल रहे अंबेडकर उत्कृष्ट केंद्र की ओर से अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए पुरस्कार समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो (डॉ) सत प्रकाश बंसल ने की।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना और कुलगीत से हुई। अधिष्ठाता अकादमिक प्रो प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने इस अवसर पर डा. अंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डाला। वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति ने केंद्र की सफलता के संदर्भ में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए। उन्होंने कहा कि डॉ अंबेडकर का जीवन एक मानक जीवन है, इतिहास में उनकी जगह कोई नहीं ले सकता। आत्मविकास को परिभाषित करते हुए बहुत खूबसूरती से उन्होंने इसे डॉ. अंबेडकर के जीवन से जोड़ा। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अंबेडकर को न केवल पढ़ना, उनके जैसा जीना, वैसे ही हो जाना और अंबेडकर का आत्मविश्वास लेकर आगे बढ़ना ही आत्मविकास है। डॉ अंबेडकर केवल जातिवाद के खिलाफ ही नहीं थे, उन्होंने समग्र भारत के निर्माण की बात की थी। प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन) पर बोलते हुए कुलपति ने अंबेडकर जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात की।



हम पहले भारतीय हैं, हम पहले भारत के हैं। जो पहचान और सम्मान हमें अपने देश में मिलता है, वो कहीं बाहर नहीं मिलता। उन्होंने ये भी कहा कि अगर डॉ अंबेडकर के विचारों को पहले ही शिक्षा नीति में जगह दी गई होती तो नई शिक्षा नीति बनाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो पियेगा वो दहाड़ेगा। अंबेडकर का दृष्टिकोण ही था कि कोई भी अशिक्षित नहीं होना चाहिए। उन्होंने अंबेडकर सेंटर ऑफ़ एक्सिलेंस को संबोधित करते हुए कहा कि आप इस विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इसके साथ ही आश्वासन दिया कि अंबेडकर सेंटर ऑफ़ एक्सिलेंस से डॉ अंबेडकर पर सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अधिष्ठाता अकादमिक को संबोधित करते हुए विविध सुविधाओं को प्रदान करने की बात की। कार्यक्रम के दौरान विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। जिनमें क्विज कॉपिटिशन में आईना सनेही (विवेकानंद ग्रुप), पोस्टर मेकिंग में सपना (प्रथम), वर्षा (द्वितीय) एवं प्रतिभा शिल्पा (तृतीय) काव्य पाठ में अरुण (प्रथम), जितेंद्र (द्वितीय), दीक्षा (तृतीय), भाषण प्रतियोगिता में अभय (प्रथम) जितेंद्र (द्वितीय), शुभम् एवं शालिनी (तृतीय)। मंच संचालन डॉ अंकिता शर्मा और धन्यवाद भाषण डॉ. राजकिशोर सिंह ने दिया।

केंद्रीय विश्वविद्यालय एचपीटीडीसी के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का करेगा आयोजन



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय एचपीटीडीसी के कर्मचारियों के लिए स्किल डेवलपमेंट प्लान या मैन पावर डेवलपमेंट प्रोग्राम के आयोजन में सहायता करेगा। इसी संबंध में वीरवार को कुलपति सचिवालय में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस मौके पर दोनों संस्थानों के प्रतिनिधियों में कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. नरेंद्र सांख्यान, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, निदेशक पर्यटन प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ मौजूद रहे। वहीं एचपीटीडीसी के एमडी (आईएएस) राजीव के अलावा कैलाश ठाकुर, एजीएम धर्मशाला, पालमपुर काम्पलैक्स, विजय ठाकुर, एसिस्टेंट मैनेजर मार्केटिंग आफिस धर्मशाला और निखिल परमार इंचार्ज चामुंडा-पालमपुर मौजूद रहे।

समझौता ज्ञापन के अनुसार एचपी टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन के अनुसार स्किल डेवलपमेंट प्लान या मैन पावर डेवलपमेंट प्रोग्राम हैं वहां के कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण, साथ ही साथ डीपीआर प्रोजेक्ट बनाने के कार्यों के अलावा एमबीए टूरिज्म के जो विद्यार्थी हैं वो इंटरन के तौर पर एचपीटीडीसी के होटलों में काम करें और होटल मार्केटिंग को सीखें और आगे बढ़ाएं। वहीं कुलपति प्रो. बंसल ने इस समझौता ज्ञापन पर हर्ष जताया। उनके अनुसार एचपीटीडीसी के होटलों में विश्वविद्यालय में आने वाले अतिथियों को ठहराया जाता है तो उन्हें इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के बाद डिस्काउंट रेट पर कमरे मिल पाएंगे। भोजन में भी छूट का प्रावधान रहेगा। वहीं इसी सत्र से विश्वविद्यालय में होटल मैनेजमेंट का कोर्स शुरू हो रहा है तो उसमें जो विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करेंगे, उनके प्रैक्टिकल खनियारा स्थित एचपीटीडीसी का जो होटल मैनेजमेंट का प्रशिक्षण केंद्र है वहां पर कार्य करने और सीखने की सुविधा प्रदान की जाएगी। उनके ट्रेनिंग प्रोग्राम विश्वविद्यालय आयोजित करेगा। टूरिस्ट गाइड के प्रोग्राम भी शामिल होंगे। इस संबंध में एचपीटीडीसी के मैनेजिंग डायरेक्टर (आईएएस) राजीव के अनुसार टूरिस्ट गाइड के प्रोग्राम के संबंध में राज्य सरकार के स्टेट टूरिज्म डिपार्टमेंट से भी बात की जाएगी। जिससे लाइसेंस संबंधित दिक्कत न आए। उन्होंने इस समझौता ज्ञापन पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि निश्चित रूप से इस समझौता ज्ञापन का काफी लाभ मिलेगा। विश्वविद्यालय एक शिक्षण संस्थान है और यहां पर पर्यटन के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण

मौखिक और पोस्टर प्रस्तुतियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी सम्मानित

सीयू के शाहपुर परिसर में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

धर्मशाला। "नवाचार के लिए युवा मस्तिष्कों का पोषण - 2025 (एनवाईएमएसआई -2025)" विषय पर केंद्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन 15-16 मई को हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शाहपुर परिसर में हुआ। स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज़ द्वारा एवं हिमालयन लाइफ साइंस सोसाइटी (एचएलएसएस) के सहयोग से आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से प्रमुख वैज्ञानिक, शिक्षाविद एवं शोधार्थी शामिल हुए।

राष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन में तीन प्रमुख वैज्ञानिकों ने अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। यह सत्र नवाचार, कृषि प्रौद्योगिकी, और टिकाऊ जलीय संसाधनों पर केंद्रित रहा। सत्र की शुरुआत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के जीव विज्ञान विभाग के प्रोफेसर व यूजीसी- एमएमटीटीसीसी (एचआरडीसी) के निदेशक, प्रो. डी.आर. ठाकुर के व्याख्यान से हुई। दूसरे प्रमुख वक्ता, डॉ. पंकज सूद, प्रधान विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, मंडी, ने "कृषि का भविष्य: अत्याधुनिक तकनीक और नवाचार" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में ड्रोन, सेंसर, और डेटा-आधारित निर्णय लेने की तकनीकों के महत्व को रेखांकित किया। अंतिम प्रस्तुति पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के जीव विज्ञान विभाग के प्रो. वाई. के. रावल द्वारा दी गई, जिनका विषय था "विदेशी मत्स्य प्रजातियों का प्रवेश: टिकाऊ जलीय कृषि का एक समाधान"। उन्होंने बताया कि नियंत्रित और विवेकपूर्ण ढंग से विदेशी प्रजातियों का उपयोग जलीय कृषि के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है। अपने शोध कार्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने हिमाचल प्रदेश की दो प्रमुख मछली



प्रजातियों — स्नो ट्राउट और ब्राउन ट्राउट — पर किए अध्ययनों की जानकारी दी।

राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन तकनीकी सत्र-II में तीन विषय विशेषज्ञों द्वारा जैव प्रौद्योगिकी, एंजाइम प्रौद्योगिकी, और बायोइन्फॉर्मेटिक्स पर केंद्रित सशक्त व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। इस सत्र आरंभ "सेल कल्चर आधारित रोग मॉडल: अनुप्रयोग, चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ" पर पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के डॉ. रविंदर कुमार द्वारा दिए गए व्याख्यान से हुआ। इसी क्रम में सत्र के दूसरे प्रमुख वक्ता, डॉ. अरुण कुमार

(प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर) ने "सतत विश्व के लिए एंजाइम" विषय पर व्याख्यान दिया। दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञों के व्याख्यानों के साथ छात्रों एवं शोधार्थियों द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसमें जैव प्रौद्योगिकी एवं बायोइन्फॉर्मेटिक्स, सतत पशुपालन उत्पादन प्रणाली, पोषण सुरक्षा एवं जैव विविधता, तथा परमाणु से जीवन तक: विज्ञान की परस्पर जुड़ी हुई दुनिया जैसे विषयों पर लगभग 130 पोस्टर व 18 मौखिक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

कार्यक्रम का उपचारिक समापन अवसर पर आयोजन सचिव डॉ. राकेश ठाकुर ने सम्मेलन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। समापन समारोह में सत्र के विशेष अतिथि रजनीश महाजन, डीएफओ, डलहौज़ी वन मंडल ने सभी छात्रों के साथ अपने बहुमूल्य विचार साझा किए।

वहीं, मुख्य अतिथि डॉ. सुदेश कुमार यादव, सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने सभी प्रतिभागियों और विभिन्न सत्रों में मौखिक और पोस्टर प्रस्तुतियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान कर पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को बधाई दी। अंत में मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार, डीन अकादमिक्स, एवं डॉ. मनोरमा पत्री (सह-संयोजक) ने सभी अतिथियों, आमंत्रित वक्ताओं, आयोजन समिति और सभी प्रतिभागियों को दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन की सफलतापूर्वक सम्पन्नता पर धन्यवाद ज्ञापित कर सम्मेलन का उपचारिक सफल समापन किया।

मनमोहक नाटी पेश कर लूटी वाहवाही कार्यक्रम का समापन एक मनमोहक नाटी की प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसने समस्त दर्शकों को हिमाचली लोकसंस्कृति की झलक दी। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों द्वारा नशा विरोधी सामाजिक संदेश पर आधारित एक प्रभावशाली लघु नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। इन प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को एक सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना से परिपूर्ण समापन प्रदान किया।

संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा विश्वविद्यालय- प्रो. बंसल

संस्कृत विभाग की पांच दिवसीय कार्यशाला के समापन पर बोले कुलपति

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से सन्ध्यनुप्रयोग कार्यशाला सन्धियों अनुप्रयोगात्मक पञ्च दिवसीय कार्यशाला का समापन धौलाधार परिसर एक में हुआ। इस समापन समारोह में बतौर मुख्यातिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. रोशन लाल शर्मा मौजूद रहे। वहीं कार्यशाला में दोनों विषय विशेषज्ञ सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप तथा डॉ. यजकृष्ण भी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व डॉ. ना. वैति सुब्रह्मण्यन ने निभाया। दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्र कुमार ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला के संयोजक प्रो. बृहस्पति मिश्रा रहे।

मुख्यातिथि का सम्मान विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्र कुमार द्वारा किया। वहीं सारस्वतातिथि प्रो. प्रदीप कुमार का सम्मान प्रो. बृहस्पति मिश्रा ने, विशिष्ट अतिथि प्रो. रोशन लाल शर्मा का सम्मान डॉ. रणजीत कुमार ने, विषय विशेषज्ञ विद्वान् जयकृष्ण शर्मा का सम्मान



कार्यशाला की सहसंयोजिका डॉ. अर्चना द्वारा और सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप का सम्मान विभागीय प्राध्यापक डॉ. विवेक शर्मा ने किया। सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि संस्कृत भाषा का व्याकरण बहुत ही दृढ़ और

उन्नत है। एकाकी एकांकी, जैसे शब्दों में व्याकरण के दृष्टि से शब्द के अर्थ को बदल देने वाले मुख्य व्याकरण विषयों के बारे में बताते हुए, इसी तरह व्याकरण में सन्धि विषयों को अभ्यास के रूप में जानने के लिए

आयोजित पञ्च दिनात्मक अनुप्रयोगात्मक कार्यशाला का सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के लिए शुभकामनाएँ दिए। इस मौके पर बतौर मुख्यातिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल इस कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए संस्कृत विभाग को बधाई दी और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने हेतु उचित दिशानिर्देश भी प्रदान किए। उन्होंने स्पष्ट रूप से विभाग के सभी प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वह संस्कृत एवं AI के मध्य समन्वय स्थापित करने हेतु कार्य करें। जो भी संस्कृत भाषा की दृष्टि से उपयोग करने योग्य तकनीक या एप्लीकेशंस हैं, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएं। इसी के साथ उन्होंने सर्व समाज के लिए उपयोगी संस्कृत भाषा और व्याकरण से संबंधित पुस्तकों की लेखन एवं विश्वविद्यालय द्वारा उनके प्रकाशन के लिए उचित निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा जिस प्रकार से भी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो ऐसा उपाय संस्कृत विभाग के द्वारा किया जाना चाहिए, यह भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल स्रोत है। अतः संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता है। जिससे हमारी प्राचीन ज्ञान निधि समाज के सामने आ सके। अन्त में कुलपति ने भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए विशेष परिश्रम करने हेतु सभी को प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय में देवर्षि नारद पीठ की होगी स्थापना

केंद्रीय विवि में पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव मिडिया स्कूल की से ओर से कार्यक्रम
देवर्षि नारद जयंती पर हुए कार्यक्रम में विश्व संवाद केंद्र, शिमला की रही सहभागिता

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव मीडिया स्कूल तथा विश्व संवाद केंद्र, शिमला के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के सभागार में देवर्षि नारद जयंती का आयोजन किया गया। अतिथियों का स्वागत व परिचय पत्रकारिता, संचार व नव मिडिया स्कूल की अधिष्ठाता व अध्यक्ष डॉ अर्चना कटोच ने किया। मौके पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र कुमार रहे और मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल मौजूद रहे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय में देवर्षि नारद पीठ की स्थापना की जाएगी ताकि संचार की दृष्टि से नारद साहित्य पर और अधिक शोध व अध्ययन हो सके। उन्होंने देवर्षि नारद के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि षड्यंत्र पूर्वक देवर्षि नारद का चित्रण नकारात्मक तरीके से किया गया। फिल्मों, नाटकों व साहित्य के माध्यम से यह किया गया। जबकि देवर्षि नारद जी जैसा विद्वान, सचेतक व मानव हितैषी पूरे त्रिलोक में कोई नहीं हैं। ब्रम्हा पुत्र देवर्षि नारद जी तीनों लोकों में घूम-घूम कर वस्तु स्थिति का मूल्यांकन करते हैं तथा जहाँ समस्या होती है उसके समाधान के लिए सम्बन्धित देवी-देवताओं से गुहार लगाते हैं। जो समस्याओं के जनक होते हैं उन्हें उलाहना देना व सचेत करने का कार्य भी वह करते हैं। सभी

लोकों में शांति, सद्भावना व मानवता बनी रहे, सबका कल्याण हो, इसी उद्देश्य से वह तीनों लोकों का भ्रमण व वहां संचार वह आदि काल से करते आ रहे हैं। इसीलिए उन्हें ब्रम्हांड का आदि संचारक कहा जाता है। मौके पर उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तथा राष्ट्रीय स्वयं

जयंती मनाने का कार्य विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के मीडिया विभागों व विभिन्न मीडिया संगठन भी स्वतः ही करने लगे हैं, जो कि बहुत ही प्रसन्नता व संतोष का विषय है। आज के समय में संवाद बहुत आवश्यक है। जब संवाद हीनता की स्थिति पैदा होती है तब बहुत बड़ी-बड़ी समस्याओं का आकरणा ही जन्म होता है।



सेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र कुमार ने विश्व संवाद केंद्र तथा देवर्षि नारद जयंती समारोह प्रारम्भ करने की यात्रा का उल्लेख किया।

उन्होंने बताया कि प्रारम्भ में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा किंतु समय के साथ अब यह कार्य आसान हो गया है। अब देवर्षि नारद

आज विश्व में नरेटिव के माध्यम से लोगों का मानस बदला जा रहा है। हमें भी उसमें आगे रहना होगा, मगर ध्यान रखना होगा कि नरेटिव युद्ध में संयम और संतुलन बना रहे अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। जरूरत इस बात की है कि मीडिया में नकारात्मक सामग्री कम हो व

सकारात्मक सामग्री ज्यादा हो। इसका समाज को ज्यादा लाभ होता है। हाल ही में भारत-पाकिस्तान के बीच उपजे तनाव के दौरान भी देखा गया कि किस-किस तरह की सामग्री परोसी जा रही थी। ऐसी सामग्री से बचा जा सकता था। लेकिन इसी बीच मीडिया के अनेक समूह ऐसे भी थे जो तथ्य व सत्य पर आधारित समाचार दे रहे थे जो कि निश्चित रूप से प्रशंसनीय था। पाठक और दर्शक को भी प्रतिक्रिया देने का अभ्यास करना चाहिए। जो अनुचित हो उसे रिपोर्ट करना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल द्वारा विश्वविद्यालय में देवर्षि नारद पीठ स्थापित करने की घोषणा को सराहा।

विश्व संवाद केंद्र, शिमला के अध्यक्ष राजेश बंसल ने विश्व संवाद केंद्र का परिचय, स्थापना का उद्देश्य, अब तक की यात्रा व देवर्षि नारद जयंती मनाये जाने के औचित्य के विषय में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान जिला के प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया के प्रतिनिधियों ने भी कार्यक्रम को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि व विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, परिसर निदेशक प्रो. रोशन लाल शर्मा, विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के प्रभारी प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, समाज सेवक भूषण रैना, अभिषेक कुमार सहित मीडिया कर्मी, शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी व विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

पर्यावरण एवं आपदाओं से जुड़े विषयों पर अनुसन्धान को समाज केंद्रित करें शोधार्थी



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने शोधार्थियों से पर्यावरण एवं आपदाओं से जुड़े विषयों पर अनुसंधान को समाज केंद्रित और समाज उपयोगी दिशा में ले जाने का आह्वान किया। उन्होंने विभाग को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल के रूप में पौधारोपण अभियान शुरू करने के लिए प्रेरित किया। वे वीरवार को विश्वविद्यालय के शाहपुर परिसर में पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान स्कूल की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

"पर्यावरण स्थिरता, जलवायु अनुकूलनशीलता और आपदा प्रबंधन- 2025" विषय पर इस संगोष्ठी का शुभारंभ प्रारंभ मंत्रोच्चारण और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन सत्र मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल

की गरिमामयी उपस्थिति में प्रारंभ हुआ। सम्मेलन में पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आदर्श पाल विज वशिष्ठ अतिथि एवं डॉ. तेजपाल देहवा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रो. दीपक पंत, अधिष्ठाता पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान स्कूल, प्रो. सुनील ठाकुर, अधिष्ठाता छात्र कल्याण एवं पृथ्वी और पर्यावरण स्कूल के साथ अन्य स्कूलों के सभी गणमान्य प्राध्यापक उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि प्रो. आदर्श पाल विज ने सम्मेलन में "प्लास्टिक के विकल्पों" विषय पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) की महत्ता पर प्रकाश डाला और बताया कि प्लास्टिक के निर्माण और उपयोग से होने वाले पर्यावरणीय एवं स्वास्थ्य संबंधी दुष्प्रभावों को कम करने में निर्माता और उपभोक्ता दोनों की जिम्मेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुख्यवक्ता डॉ तेजपाल देहवा ने "जलवायु परिवर्तन के वैश्विक खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों" पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने बताया कि बदलते जलवायु पैटर्न का प्रभाव केवल वैज्ञानिक या नीतिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आम जनजीवन को भी सीधे प्रभावित करता है — जैसे कृषि उत्पादकता में गिरावट और चरम मौसम घटनाओं की बढ़ती प्रवृत्ति। अधिष्ठाता प्रो. दीपक पंत ने सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया और सम्मेलन की वैश्विक पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने पर्यावरण दिवस 2025 की थीम "प्लास्टिक प्रदूषण" पर उपस्थित महानुभावों से चर्चा की। दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से 70 से अधिक प्रतिभागी अपने अपने शोध विषयों पर पोस्टर एवं मौखिक प्रस्तुति प्रस्तुत करेंगे। राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार एवं रजिस्ट्रार प्रो. सुमन शर्मा ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

एक क्लिक से मिलेगी ऑनलाइन शिक्षा के संबंध में पूरी जानकारी



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने हाल ही में विश्वविद्यालय में स्थापित दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन) की वेबसाइट का विमोचन किया। सीडीओई की इस वेबसाइट (www.cdoe.cuhimachal.ac.in) पर एक क्लिक से विद्यार्थी केंद्रीय विश्वविद्यालय में ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने से संबंधित अनेक प्रकार की जानकारी हासिल कर सकेंगे।

इस मौके पर कुलपति प्रो. बंसल ने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश विभिन्न प्रकार से अनेक विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए लगातार प्रयासरत है। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय ने इस सत्र से ऑनलाइन शिक्षा मुहैया करवाने का निश्चय किया है। विश्वविद्यालय को नैक की ए+ ग्रेडिंग मिलने के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने छात्रों को ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को अधिकृत किया है। इस वेबसाइट के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की जानकारी हासिल कर सकेंगे। साथ ही प्रवेश, परीक्षा और परिणाम से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी सीडीओई की इस वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगी। इस अवसर पर कुलपति ने दूरवर्ती और ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (सीडीओई) के निदेशक प्रो. विशाल सूद को ऑनलाइन शिक्षा को आगे बढ़ाने एवं इस केंद्र को सुचारु रूप से कार्यान्वित करने हेतु बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, दूरवर्ती और ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के सह निदेशक डॉ चमन लाल, सहायक निदेशक डॉ हरीश गौतम, सीआईक्यूए निदेशक डॉ आर पी राय, कंप्यूटर प्रणाली विश्लेषक डॉ. गिरीश शर्मा इत्यादि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से होगा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास – प्रो. बंसल

सीयू और छात्र परिषद की ओर से “अनुकृति” कार्यक्रम

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और छात्र परिषद की ओर से आयोजित अनुकृति कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल बतौर मुख्य अतिथि, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. नागेश ठाकुर बतौर विशिष्ट अतिथि, हिमाचल प्रदेश राज्य युद्ध स्मारक विकास सोसायटी के अध्यक्ष कर्नल के. के. एस. डडवाल बतौर विशेष उपस्थिति मौजूद रहे। वहीं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार ने इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा रखी।

इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश में “ए+” ग्रेडिंग वाला पहला विश्वविद्यालय है। उन्होंने अनुकृति कार्यक्रम के माध्यम से विश्वविद्यालय में पढ़ रहे विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा छात्रों की रचनात्मक, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलेगा और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा। उन्होंने विद्यार्थियों से स्वामी विवेकानंद जी द्वारा दिखाए गए पदचिह्नों पर चलने का

आह्वान किया तथा विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को पाने के लिए युवाओं की भूमिका को सुनिश्चित करने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में



छात्र परिषद के विभाग प्रतिनिधियों को आने वाले समय में सांस्कृतिक विविधता के आदान-प्रदान के लिए पड़ोस के विश्वविद्यालयों में भेजा जाएगा। वहीं कार्यक्रम के

विशिष्ट अतिथि प्रो. नागेश ठाकुर ने कहा कि छात्र परिषद, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अनुकृति कार्यक्रम युवाओं को जोड़ने वाली बहुत ही शानदार पहल है। इस कार्यक्रम से पूरे देश के अलग-अलग प्रदेशों से जो तरुणाई छात्र शक्ति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही है उनके लिए अपनी अपनी सांस्कृतिक धरोहर एवं कला को प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान कर रही है। कार्यक्रम के विशेष अतिथि कर्नल के. के. एस. डडवाल ने कहा कि युवा देश हित में कार्य करें और अनुकृति जैसे कार्यक्रमों का हिस्सा बनकर अपनी संस्कृति को साझा करें। उन्होंने कहा कि हमें भारतीय सेना पर गर्व है जिन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से आतंकवादियों को पस्त किया। ऑपरेशन सिंदूर देश के लिए गौरवान्वित करने वाला मिशन है।

छात्र परिषद व विश्वविद्यालय कोर्ट सदस्य हेमराज ने बताया कि इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी परिसरों के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रयोगितियाओं में जैसे पोस्टर मेकिंग, भाषण प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता एवं युवा संसद में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को आज सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान सम्मानित किया गया। छात्र परिषद व विश्वविद्यालय के कोर्ट सदस्य पायल शर्मा ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले विश्वविद्यालय परिवार का आभार जताया।

सन्धियों के ज्ञान से परिचित होंगे विद्यार्थी-शोधार्थी

केंद्रीय विश्वविद्यालय में पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से “सन्ध्यानुप्रयोग कार्यशाला सन्धियों अनुप्रयोगात्मक” पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। इस उद्घाटन समारोह में मुख्यातिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप ने की तथा इस कार्यशाला के समन्वयक संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. योगेंद्र कुमार रहे। प्रो. बृहस्पति मिश्र कार्यशाला के संयोजक रहे तथा सह संयोजक डॉ. ना.वैति सुब्रह्मण्यन तथा सहसंयोजिका डॉ. अर्चना कुमारी रहे। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन डॉ. ना.वैति सुब्रह्मण्यन ने किया। विभागाध्यक्ष प्रो. योगेंद्र कुमार, प्रो. बृहस्पति मिश्र और कार्यशाला के सहसंयोजिका डा. अर्चना ने मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार, सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप और विषय विशेषज्ञ विद्वान् जयकृष्ण शर्मा का स्वागत किया। वहीं विभाग अध्यक्ष का स्वागत



प्राध्यापक डॉ. भजहरि दास ने किया। अतिथियों के सम्मान के पश्चात् अतिथियों का स्वागत तथा परिचय एवं कार्यशाला का उद्देश्य और महत्त्व के बारे में कार्यशाला के संयोजक

प्रो. बृहस्पति मिश्र ने विस्तार से समझाया।

तत्पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि संस्कृत भाषा इतर भाषाओं से अतिविशाल है इसकी शब्द भंडार अति विशाल है। इस भाषा का व्याकरण बहुत ही दृढ़ और उन्नत है। इस भाषा का व्याकरण का अत्यन्त प्रारम्भिक विषय सन्धियों का ज्ञान होना अनिवार्य है इस विषय का अनुप्रयोगात्मक कार्यशाला संस्कृत विभाग से किया जा रहा है अति प्रशंसनीय है और उन्होंने छात्रों को यह भी उद्बोधन किया कि वो श्रद्धा से इस कार्यशाला में अन्वय हो के अध्ययन करें और जयकृष्ण शर्मा सद्गुरु विद्वान् के मुखारविन्द से सन्धियों के विविध आयामों को सुचारु रूप से जान लें। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रताप ने सन्धियों का महत्त्व बताया। तत्पश्चात् कार्यशाला के समन्वयक प्रो. योगेंद्र कुमार ने भी सन्धियों का महत्त्व बताते हुए इस कार्यशाला के आयोजन के लिए हर एक कक्षाओं से 15 मिनट स्वीकार करके दो घण्टे का अवसर प्राप्त कर के किया जा रहा है। धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् राष्ट्रगीत से उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीयू में संस्कृत विभाग, एनएसएस ईकाई – 01 ने करवाया व्याख्यान

धर्मशाला। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के मार्गदर्शन में पंच प्रण पहल कार्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग एवं एनएसएस ईकाई – 01 धौलाधार :विकसित भारत का आधार - पंच प्रण; विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. योगेंद्र कुमार उपस्थित रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ. विवेक शर्मा ने उपस्थित सभी लोगों को पंच प्रण का संकल्प दिलवाया। इससे पूर्व संयोजक एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विवेक शर्मा ने सभी का स्वागत किया तथा :पंच प्रण पहल; कार्यक्रम में आए सभी श्रोताओं के प्रति आभार जताया कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय पंच प्रण पहल के परिसर एक के सह समन्वयक और संस्कृत विभाग के सहायकाचार्य डॉ. विवेक शर्मा ने किया।

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के साथ आपदा प्रबंधन केंद्र स्थापित करेगा, मंत्रालय की मंजूरी



धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश में आपदा तैयारियों को बढ़ावा देने के लिए, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएचपी) को आपदा प्रबंधन केंद्र स्थापित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से

मंजूरी मिल गई है। यह महत्वपूर्ण कदम इस क्षेत्र में आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के प्रतियुत्तर में एक आधार है, विशेष रूप से 2023 की कुल्लू मनाली आपदा, 2024 की रामपुर आपदा और 30 जून, 2025 को जिला मंडी के सिराज क्षेत्र में जिस प्रकार का मंजर दिखाई दिया ऐसी घटनाओं से जनता को जागरूक और सचेत करने तथा जानकारी से लाभान्वित करना केन्द्रीय विश्वविद्यालय का लक्ष्य होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि नव अनुमोदित केंद्र (सीयूएचपी) के हाल ही में प्रारम्भ किए गए भूविज्ञान विभाग और रिमोट सेंसिंग और जीआईएस (जीआईएस) केंद्र के साथ कार्य करेगा। इन्होंने कहा कि इन विभागों को प्राकृतिक

आपदाओं के प्रबंधन में अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग को बढ़ाने के लिए विकसित किया जा रहा है। कुलपति बंसल ने कहा कि “पिछले कुछ वर्षों में हिमाचल प्रदेश में आपदा संबंधी चुनौतियों के बढ़ते दबाव के साथ, आपदा प्रबंधन में संस्थागत विशेषज्ञता बनाने की स्पष्ट आवश्यकता थी। आपदा प्रबंधन केंद्र क्षमता निर्माण, अनुसंधान और फील्ड प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय एक केंद्र के रूप में काम करेगा।

विश्वविद्यालय शीघ्र ही आपदा प्रबंधन में एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है, जो आपदा जोखिम में कमी, आपातकालीन प्रतिक्रिया और अंतरिक्ष-आधारित प्रौद्योगिकियों के उपयोग में मानव संसाधनों के प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करेगा।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि विश्वविद्यालय में पृथ्वी विज्ञान और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में 38 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ लब्धप्रतिष्ठ भूविज्ञानी प्रोफेसर एके महाजन के नेतृत्व में डॉ. आलोक कुमार पांडे, डॉ. पीतांबर उपाध्याय, डॉ. बटुक जोशी और डॉ. अरुण कुमार जैसे योग्य संकायों की एक टीम द्वारा प्रशिक्षण और शैक्षणिक कार्यक्रमों का नेतृत्व करने के लिए सहयोग दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि ‘यह हिमाचल प्रदेश के लिए बहुत आवश्यक कदम है, इस आपदा प्रबंधन केंद्र से एक ऐसे राज्य में स्थानीय क्षमता और लचीलापन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है जो विशेष रूप से भूस्खलन, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के लिए अपरिहार्य है।

सीयू के एनएसएस स्वयंसेवकों ने आदि हिमानी चामुंडा में लोगों को स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

छेड़ा सफाई अभियान, 80 किलो से अधिक प्लास्टिक किया एकत्रित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला धौलाधार परिसर-1 की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई-1 के स्वयंसेवकों ने आदि हिमानी चामुंडा में एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन कर स्वच्छता अभियान छेड़ा। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विवेक शर्मा के निर्देशन में लगाए गए इस शिविर में पचास एनएसएस स्वयंसेवकों ने मन्दिर के चारों ओर और मन्दिर मार्ग के आसपास फैले कचरे को एकत्रित कर ठिकाने लगाया।

स्वयंसेवकों ने स्वच्छता अभियान के साथ हिमानी चामुंडा मार्ग एवं मन्दिर के वातावरण को अपने भजनों से धार्मिकता से ओतप्रोत कर दिया। स्वयंसेवकों के जयकारों से मन्दिर परिसर का वातावरण गुञ्जायमान हो गया। मन्दिर आए श्रद्धालुओं के सम्मुख मोहित शर्मा एवं सागर भाटिया ने अपने भजनों की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दीं। स्वयंसेवकों ने आने वाले पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को मन्दिर परिसर को स्वच्छ बनाने का संदेश दिया। उस क्षेत्र के निवासियों एवं अन्य श्रद्धालुओं ने हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला धौलाधार

परिसर 1 की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई 1 के स्वयंसेवकों द्वारा एक दिवसीय स्वच्छता अभियान की प्रशंसा की। इस स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत स्वयंसेवकों ने 80 किलो प्लास्टिक, बॉटल आदि कूड़े को एकत्रित कर निर्धारित कूड़ेदान तक पहुँचाया। केन्द्रीय विश्वविद्यालय से सम्बन्ध रखने वाले



स्वयंसेवक

नेहा, अखिल, तरुणेश, सिमरन, दिव्या, करीना, मन्जू, तन्जिन, रुमाली, संगम, ज्योति धीमान, निधि, सानिया, काजल, शिवानी, कनिका, ऋषिता, कोमलिका, अंकित, प्रिया आदि ने इस दौरान राहगीरों को स्वच्छता का महत्व समझाया। गौरतलब है कि हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

धौलाधार परिसर 1 की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई 1 द्वारा धर्मशाला के कई पर्यटक स्थलों एवं धार्मिक स्थलों की स्वच्छता कार्य को किया गया है। इससे पूर्व ईकाई द्वारा त्रियुण्ड, नड्डी, माता चामुण्डा क्षेत्र को स्वच्छ बनाने का कार्य किया गया है। आदि हिमानी चामुण्डा में स्वच्छता अभियान चलाने के लिए हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. सुनील कुमार, एन एस एस समन्वयक डॉ. मलकीत सिंह ने हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला धौलाधार परिसर 1 की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई 1 के स्वयंसेवकों एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विवेक शर्मा को इस स्वच्छता अभियान को आयोजित करने के लिए साधुवाद प्रदान किया। वहीं कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्वयंसेवक सेवा कार्य के लिये जाने जाते हैं, जो अन्य युवाओं के लिये प्रेरक पुञ्ज हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले समय में भी ऐसे सामाजिक कार्यों के निष्पादन हेतु एनएसएस ईकाई तत्पर रही है।

हिमाचल की दोहरी जीत: साक्षरता में शिखर, स्वावलंबन में अग्रणी



शिमला: देवभूमि हिमाचल प्रदेश, जिसे अक्सर उसकी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, अब एक नए और अभूतपूर्व कारण से राष्ट्रीय सुर्खियों में है। यह राज्य न केवल शिक्षा के क्षेत्र में एक नए शिखर पर पहुंचा है, बल्कि इसने महिला सशक्तिकरण की एक ऐसी मिसाल कायम की है जो पूरे देश के लिए एक आदर्श बन सकती है। अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर, हिमाचल प्रदेश को आधिकारिक तौर पर एक पूर्ण साक्षर राज्य घोषित किया गया है, जिसके साथ ही यह देश के सबसे साक्षर राज्यों में शामिल हो गया है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ, एक और महत्वपूर्ण रिपोर्ट ने यह स्थापित किया है कि कामकाजी महिलाओं की भागीदारी के मामले में भी हिमाचल देश में सबसे आगे है। यह दोहरी विजय, कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह दशकों से चले आ रहे एक सुनियोजित प्रयास और विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचार का परिणाम है। यह एक ऐसी गाथा है जो शिक्षा और आत्मनिर्भरता के अटूट रिश्ते को दर्शाती है।

शिक्षा का सूर्योदय: 7% से 99.3% का स्वर्णिम सफर

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शिमला में आयोजित एक समारोह में राज्य को पूर्ण साक्षर राज्य घोषित करते हुए इस ऐतिहासिक मील के पत्थर की जानकारी दी। मुख्यमंत्री के अनुसार, राज्य ने 99.3% की साक्षरता दर हासिल कर ली है, जो भारत सरकार द्वारा निर्धारित 95% के राष्ट्रीय मानदंड से काफी अधिक है। यह उपलब्धि समझ, आजीवन शिक्षण सभी के लिए समाज में (उल्लास) नामक केंद्र प्रायोजित साक्षरता कार्यक्रम के तहत हासिल की गई है। इस घोषणा के साथ, हिमाचल अब मिजोरम (98.2%), गोवा (99.7%), और त्रिपुरा (95.6%) जैसे कुछ विशिष्ट राज्यों की श्रेणी में शामिल हो गया है जिन्होंने पूर्ण साक्षरता की स्थिति प्राप्त की है। यह आंकड़ा एक लंबी और चुनौतीपूर्ण यात्रा का परिणाम है। 1951 में, स्वतंत्रता के बाद, हिमाचल की साक्षरता दर मात्र 7% थी। राज्य ने इस निचले पायदान से निकलकर देश के शीर्ष पर पहुंचने का एक अद्भुत सफर तय किया है। यह प्रगति निरंतर सुधारों और दूरदर्शी नीतियों का परिणाम है। पिछले कुछ वर्षों में, हिमाचल ने शिक्षा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं। मुख्यमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि राज्य में छात्र-शिक्षक अनुपात देश में सबसे अच्छा है, जो शिक्षा की गुणवत्ता का एक प्रमुख संकेत है।

स्वावलंबन की नई इबारत: पहाड़ी महिलाओं का कार्यबल में दबदबा

हिमाचल की साक्षरता की सफलता के साथ ही, एक और महत्वपूर्ण आंकड़ा सामने आया है जो इस राज्य के विकास मॉडल को अद्वितीय बनाता है। भारतीय स्टेट बैंक की नवीनतम इकोब्रेप; रिपोर्ट के अनुसार, 2021 से 2023 के बीच 15-59 आयु वर्ग की महिलाओं के बीच श्रम बल भागीदारी दर के मामले में हिमाचल प्रदेश ने देश में पहला स्थान हासिल किया है। रिपोर्ट के अनुसार, हिमाचल में महिलाओं की भागीदारी 49% है, जो राष्ट्रीय औसत 32% से काफी अधिक है। इस मामले में, मेघालय (45%) दूसरे और सिक्किम व नागालैंड (44% प्रत्येक) तीसरे स्थान पर हैं। इसके विपरीत, हरियाणा (21%) और पंजाब (26%) जैसे राज्यों में यह दर काफी कम है। यह उपलब्धि अचानक नहीं हुई है। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार भी, हिमाचल प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में महिला कार्यबल भागीदारी दर 47.4% थी, जो उस समय भी देश में सबसे अधिक थी। यह दर्शाता है कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी इस राज्य की सामाजिक संरचना का एक अभिन्न अंग रही है।

हालांकि, वर्तमान में प्रत्येक जिले के लिए विस्तृत और अद्यतन जिला-वार महिला कार्यबल भागीदारी दर के आंकड़े सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी राज्य स्तरीय उच्च भागीदारी दर स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यह सफलता कुछ ही जिलों तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे हिमाचल में व्यापक है।

हिमांशु सिंह
एमजेएमसी द्वितीय वर्ष

पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए मनाएँ दिवाली

दीपावली, रोशनी का त्योहार, पारंपरिक रूप से भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने पर मनाया जाता है। परंतु यह उत्सव पक्षियों और पालतू जानवरों के जीवन के लिए खतरा बन रहा है, मुख्यतः पटाखों के अत्यधिक प्रयोग के कारण। पहले दीपावली दीयों की रोशनी और पर्यावरण की रक्षा के साथ मनाई जाती थी, लेकिन आजकल यह पटाखे जलाकर मनाने की प्रवृत्ति अधिक हो गई है।



एक अध्ययन के अनुसार, दीपावली के दौरान वातावरण में पीएम 2.5, पीएम 10, सीओ, एनओ2, एसओ2, एनएच3 और ओ3 जैसे प्रदूषकों का स्तर सामान्य दिनों से कहीं अधिक हो जाता है। जलते पटाखों से निकलने वाली जहरीली गैसों पक्षियों के लिए साँस लेने में कठिनाई, जलने और दृष्टि शक्ति खोने का कारण बन सकती हैं। भारी धातुओं और नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन से भी श्वसन संबंधी परेशानियाँ होती हैं।

कुत्तों और बिल्ली के सुनने की क्षमता मनुष्यों से चार गुना अधिक होती है, जिससे वे पटाखों की तीखी आवाज को साफ-साफ सुन सकते हैं। इस तेज और डरावनी आवाज के कारण जानवरों में चिंता, तनाव और भय उत्पन्न होता है, वे अनियंत्रित दौड़ने लगते हैं और खुद को चोट पहुँचा सकते हैं जहाँ एक ओर दीपावली पर माता लक्ष्मी की पूजा होती है, वहीं एक दुखद सच्चाई यह भी है कि इसी दिन तांत्रिक क्रियाओं और अंधविश्वास के चलते हजारों उल्लुओं की बलि दी जाती है, जिससे देश में उल्लुओं की आबादी गंभीर रूप से कम हो गई है। सभी उल्लू प्रजातियाँ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत संरक्षित हैं, और इनका शिकार व तस्करी दंडनीय अपराध है, जिसके लिए सात साल तक की जेल और 25,000 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। पर्यावरण की रक्षा के लिए अब ग्रीन पटाखों का विकल्प उपलब्ध हुआ है, जो पारंपरिक पटाखों की तुलना में कम हानिकारक हैं। ग्रीन पटाखों में बेहतरीन रसायनों का प्रयोग किया जाता है, जिससे भारी प्रदूषण न हो और वातावरण संरक्षित रहे। राज्यों ने इन पटाखों की बिक्री को समर्थन देकर पारंपरिक पटाखों पर प्रतिबंध लगाया है, जिससे प्रदूषण और जीव-जन्तुओं की रक्षा की जा सके। हम सबको लक्ष्मी पूजन की धार्मिक भावनाओं के साथ भगवान राम के दिखाए मार्ग पर चलते हुए मानवीयता, विनम्रता और धर्म की भावना के अनुसार दीपावली मनाकर इसका सही अर्थ समझना चाहिए।

अभिषेक चौहान
एमजेएमसी द्वितीय वर्ष

क्या आप जानते हैं



1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पहला ऐप एलिज़ा था, जिसे 1966 में प्रो. जोसेफ वेइज़नबाम ने बनाया था। यह एक चैटबॉट था जो उपयोगकर्ताओं के संदेशों का जवाब देता था।
2. दुनिया का सबसे पहला लोकतांत्रिक संविधान 1789 में फ्रांस में लागू हुआ था, जबकि भारत का संविधान 1950 में। इसके लेखक डॉ. भीमराव अंबेडकर ने वैश्विक संविधानशास्त्रों का अध्ययन किया था।
3. हालांकि घर्षण को अक्सर नुकसानदेह माना जाता है, सुपरहाइड्रोफोबिक और नैनोटेक्नोलॉजी सतहों में इसे नियंत्रित करके माइक्रो रोबोटिक्स और नई ऊर्जा प्रणालियों में क्रांति लायी जा रही है।
4. न्यूरोसाइंस की रिसर्च दिखाती है कि ध्यान और प्राणायाम मस्तिष्क के ग्रीनोटेक्स हिस्से को सक्रिय कर, निर्णय लेने की क्षमता और रचनात्मकता बढ़ाते हैं।
5. आज के डिजिटल युग में एआई आधारित न्यूज़ जनरेशन और ऑटोमेटेड फैक्ट-चेकिंग पत्रकारिता की विश्वसनीयता बढ़ा रही है, जिससे झूठी खबरों पर नियंत्रण संभव हो रहा है।

सूरज जुत्शी
एमजेएमसी द्वितीय वर्ष

हिमाचल के गाँव में दीवाली का शहरीकरण



सबकी आवभगत करती हैं। लाल, पीले, नीले, हरे, केसरी, सफेद, गुलाबी रंगों का संयोजन मानों ज़मीन पर इंद्रधनुष उतार लाता है। दीवाली पर आपको घर-घर में रंगोली की कलात्मक डिज़ाइन देखने को मिल जाएगी। आंगन में बिखरे इसके रंगों से न सिर्फ घर, बल्कि मन का हर कोना भी रंगीन हो जाता है। जब दीवाली की रात रंगोली के चारों ओर दीप जलते हैं, तो यह सजीव हो उठती है। हिमाचल प्रदेश में चॉक से रंगोली बनाई जाती जो प्रायः स्वास्तिक के चिन्ह के आधार पर तैयार की जाती है, जिसे अल्पना कहते हैं।

दीवाली पर रंगोली बनाने की परंपरा है और माना जाता है कि इससे श्री गणेश और देवी लक्ष्मी का स्वागत किया जाता है। सबसे पहले रंगोली को घर के प्रवेश द्वार पर बनाया जाता है ताकि यह देवी लक्ष्मी का स्वागत कर सके और घर में समृद्धि का वास हो। देश के अलग-अलग हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों और शैलियों से जाना जाता है, जैसे कि महाराष्ट्र में इसे रंगोली, तमिलनाडु में कोलम और उत्तर भारत में अल्पना कहते हैं। भारतीय पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार, सबसे पहले रंगोली जैसी कलाओं के चिह्न मोहन जोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता में मिले हैं। इन प्राचीन सभ्यताओं में 'अल्पना' के निशान दर्शाते हैं कि रंगोली बनाने की परंपरा भारत में



हजारों सालों से चली आ रही है। राष्ट्रीय पुस्तकालय और भारतीय कला अनुसंधान परिषद की रिपोर्ट्स और ऐतिहासिक ग्रंथों में रंगोली के सांस्कृतिक महत्व पर जानकारी मिलती है। “इंडियन आर्ट एंड कल्चर” – नंदिता कृष्णा द्वारा, जिसमें भारतीय त्योहारों और उनकी सांस्कृतिक परंपराओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। भारतीय धार्मिक ग्रंथों और पौराणिक कथाओं से भी रंगोली के पारंपरिक संदर्भ प्राप्त होते हैं, जैसे कि महाभारत और पुराण।

इन स्रोतों में भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक महत्व पर गहन अध्ययन उपलब्ध है, जो रंगोली की गहरी परंपरा को समझने में मदद करता है। भारतीय संस्कृति में दीवाली और अन्य शुभ अवसरों पर रंगोली बनाने की परंपरा रही है। इसकी जड़ें पौराणिक कथाओं, धार्मिक मान्यताओं और प्राचीन सभ्यताओं में मिलती हैं। रंगोली को देवी-देवताओं को प्रसन्न करने और घर में सकारात्मक ऊर्जा लाने का माध्यम माना जाता है। रंगोली का इतिहास भारत में प्राचीनकाल से जुड़ा है। ऐसा माना जाता है कि वैदिक युग में भी रंगोली का प्रचलन था। इसके प्रारंभिक उदाहरण महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों में मिलते हैं। प्राचीन भारतीय ग्रंथों और कला के नमूनों से पता चलता है कि रंगोली का इस्तेमाल देवी-देवताओं की आराधना, मंगल कार्यों और सामाजिक

समारोहों में किया जाता था। रंगोली का उल्लेख ‘चौक पुरण’ के रूप में भी आता है जो विशेष अवसरों पर आंगन में बनाया जाता था। रंगोली से संबंधित कई पौराणिक कथाएं प्रसिद्ध हैं, जो इसकी उत्पत्ति के बारे में बताती हैं। एक मान्यता के अनुसार, ब्रह्माजी ने सृजन की प्रसन्नता में आम के पेड़ के रस से धरती पर एक सुंदर स्त्री की आकृति बनाई थी, जो रंगोली का पहला रूप माना जाता है। वहीं दूसरी कथा के मुताबिक, भगवान कृष्ण जब गुजरात के ध्वारिका में बस गए तो उनकी पत्नी रुक्मणी ने इस कला का आरंभ किया था।

इस प्रकार रंगोली एक ओर देवताओं से जुड़ी है तो दूसरी ओर भारतीय समाज के हृदय की अभिव्यक्ति है। एक समय था जब घरों में दरवाजों एवं खिड़कियों पर फूलों की मलाएं लगाई जाती थी, जिनका निर्माण गांव की महिलाएं करती थी। आज उन फूलों की मालाओं के स्थान पर बाजार में प्लास्टिक के फूलों की मलाई उपलब्ध हो चुकी है जिससे फूलों की मलाएं जो पहले महिलाओं द्वारा घर में बनाई जाती थी वह चलन में नहीं रही है। गांव में प्राय रंगोलिया चावल के आटे से तैयार की जाती थी आज के समय में रंगोलिया प्रायः बाजार में कागजों पर प्रिंट हुई मिल जाती हैं जिस कारण गांव में रंगोलिया का प्रचलन जिन्हें हाथों से बनाया जाता था खत्म हो रहा है इसके अलावा घरों में आंगन से लेकर अंदर पूजा घर तक लक्ष्मी के पैरों के निशाना बनाए जाते थे आजकल बाजार में प्लास्टिक से बने हुए मिल जाते हैं जिन्हें लोग अपने घरों में चिपका देते हैं।

इन सब के अलावा जहां पहले घरों में दीप जलाए जाते थे उनके स्थान पर अब मामबत्तियां झिलमिल करती लाइटें जलाई जाती हैं।

वरिंदर कुमार,
शोधार्थी, न्यू मीडिया

एक सूर्य एक पर्व : ग्लोबल फेस्टिवल की ओर छठ महापर्व

भारत विविधताओं का देश है जहां हर त्योहार समाज में प्रेम, एकता और विश्वास का संदेश देता है। इन्हीं पर्वों में से एक है छठ महापर्व जो न सिर्फ भारत बल्कि विश्व के तमाम देशों जैसे ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, फिजी, सूरीनाम, मॉरिशस, त्रिनिदाद-टोबेगो में भी जहां बड़ी संख्या में भारतीय आबादी रहती है, का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जाने लगा है।

छठ पूजा की परंपरा का उल्लेख वैदिक काल में भी मिलता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार त्रेतायुग में माता सीता ने अयोध्या लौटने के बाद सूर्य देव की उपासना की थी। तो वहीं द्वापर युग में भी द्रौपदी और कर्ण का उल्लेख महाभारत में मिलता है। इसी कारण छठ महापर्व को सबसे प्राचीन और शुद्धता का पर्व माना जाता है। भारत में सिर्फ बिहार ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश, झारखंड, दिल्ली, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हैदराबाद और अन्य राज्यों में भी बड़े हर्ष और श्रद्धा से मनाया जाता है। यह पर्व सूर्य देव और छठी मैया की उपासना को समर्पित है।

छठ महापर्व चार दिन मनाया जाता है। छठ पूजा की शुरुवात नहाए - खाए से होती है इस दिन महिलाएं लौकी की सब्जी, भात (पके चावल) और चने की दाल का सेवन कर निर्जला व्रत शुरू करती हैं। दूसरा दिन जिसे खरना कहा जाता है इस दिन व्रती पूरे दिन निर्जला व्रत रहकर शाम के समय खीर और पूरी का प्रसाद चढ़ाती है। तीसरा दिन संध्या अर्घ्य इस दिन व्रती डूबते सूरज को जल और फल अर्पित करती हैं।

चौथा और आखिरी दिन जिसे उषा अर्घ्य कहते हैं इस दिन व्रती उगते सूरज को अर्घ्य देकर व्रत का समापन करती हैं।

इन चार दिनों में व्रती शुद्धता, आत्मसंयता और भक्ति के साथ नियमों का पालन करती हैं। सांस्कृतिक कूटनीति से आर्थिक सशक्तिकरण तक यह केवल सांस्कृतिक गौरव की बात नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय निहितार्थ भी गहरे हैं

सांस्कृतिक कूटनीति: अंतरराष्ट्रीय मंच पर छठ पूजा का प्रचार-प्रसार भारत की जीवंत परंपराओं



को दुनिया के सामने प्रस्तुत कर रहा है और भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ सांस्कृतिक सेतु को मजबूत कर रहा है।

पर्यावरणीय संदेश: यह पर्व जल और वायु की शुद्धता, प्रदूषण-मुक्त परिवेश तथा सूर्य और पृथ्वी के प्रति श्रद्धा जैसे सतत विकास के सिद्धांतों को आत्मसात करता है।

आर्थिक प्रोत्साहन: छठ पूजा की मान्यता स्थानीय हस्तशिल्प, पर्यटन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल देगी। पूजा में प्रयुक्त बाँस

की टोकरी, मिट्टी के दीपक, फल और अनाज जैसे देसी उत्पाद कारीगरों और किसानों के जीवन-यापन का आधार हैं।

वैश्विक महत्व: जब पूरी दुनिया सौर ऊर्जा की ओर अग्रसर है, तब सूर्योपासना का यह पर्व आस्था और विज्ञान दोनों का अद्भुत संगम बन जाता है।

संतान सुख और सूर्य आराधना का पर्व मान्यता है कि छठ व्रत का सबसे प्रमुख उद्देश्य संतान सुख की प्राप्ति और परिवार के कल्याण से जुड़ा है। छठी मैया (षष्ठी देवी) की पूजा से निःसंतान दंपतियों को संतान की प्राप्ति होती है और बच्चों को दीर्घायु का आशीर्वाद मिलता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, छठी मैया को सूर्य देव की बहन और बालकों की रक्षक देवी माना गया है। इसलिए इस पर्व पर सूर्य देव और छठी मैया दोनों की संयुक्त रूप से पूजा की जाती है।

छठ सिर्फ पूजा नहीं बल्कि प्रकृति, जल और सूर्य को आभार प्रकट करने का माध्यम है। नदी के तट, तालाब और घाट इस दौरान दीपों की रौशनी से जगमगा उठते हैं। यह पर्व सामूहिकता, समानता और स्वच्छता का अद्भुत उदाहरण है। इस पर्व में अपने घर से दूर परदेश में रहना वह व्यक्ति भी खींचा चला आता है।

यह पर्व हमें सिखाता है कि श्रद्धा, संयम और समर्पण से हर कार्य सफल हो सकता है। वास्तव में, छठ भारत की उस सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक है, जो प्रकृति और भक्ति दोनों के प्रति समान श्रद्धा रखती है।

प्रगति
एम ए न्यू मीडिया
द्वितीय वर्ष

मुख्य- संरक्षक

प्रो.सत प्रकाश बंसल,
माननीय कुलपति

संरक्षक

प्रो. प्रदीप कुमार,
डीन-अकादमिक

सह-संरक्षक

प्रो. नरेंद्र कुमार सांख्यान,
कुलसचिव

सह-संरक्षक

प्रो. सुमन शर्मा,
माननीय कुलपति के सचिव

मुख्य सम्पादक

प्रो. आदित्य कांत

सम्पादक

डॉ. राम प्रवेश राय

उप-संपादक

श्री दीपक वैष्णव

संपादकीय टीम

प्रो. चंद्रकांत सिंह
डॉ. विवेक शर्मा
डॉ. हेमराज बंसल
डॉ. पूजा अवस्थी
सूरज जुत्शी

अस्वीकरण: प्रदर्शित लेख केवल सूचना के उद्देश्य से हैं और इन्हें कानूनी दस्तावेज़ नहीं माना जा सकता है।

नोट:- आप अपने लेख न्यूज़लेटर के लिए इस ईमेल आईडी पर भेज सकते हैं: newsletter@hpcu.ac.in